SYLLABUS

Subject – Hindi

Unit	Contents
UNIT – I	मैथिलीशरण गुप्त परिचय पाठः मातृभूमि (कविता)
	प्रेमचन्दः परिचय पाठः शतरज के खिलाड़ी (कहानी)
	व्यग्यः शरद जोशी जीप पर सवार इल्लियाँ नियत कार्य - हिन्दी में षट्ऋतुओं के नाम लिखिए एवं अपनी रूचि अनुसार किसी एक ऋतु का विवेचन किजिए।
UNIT – II	वैचारिक भारतीय भाषाओं में राम
	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल परिचय पाठ: उत्साह (भावमूलक निबन्ध)
	रामधारी सिंह दिनकर परिचय पाठ: भारत एक है (संस्कृति)
	आदिशंकराचार्य-जीवन व दर्शन नियत कार्य - हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध कहानीकारों के नाम लिखिए तथा किसी एक कहानी की समीक्षा प्रस्तुत किजिए।
UNIT – III	पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द अनेक शब्द के लिए एक शब्द (हिन्दी व्याकरण)
	संधि और उसके प्रकार (हिन्दी व्याकरण) नियत कार्य - हिन्दी विधा के विविध पत्रों के प्रकारों का विवेचन किजिए एवं कोई एक औपराचिक पत्र लिखिए।
	बीज शब्द- धर्म, अद्वैत, भाषा, अवधारणा, उदारीकरण ।

renaissance
renaissance

Unit -1

मैथिलीशरण गुप्त का जीवन परिचय

नाम	मैथिलीशरण गुप्त
जन्म	1886 ई.
जन्म स्थान	चिरगांव, झांसी, उत्तर प्रदेश
मृत्यु	1964 ई.
मृत्यु स्थान	चिरगांव झांसी
पिता का नाम	सेठ रामचरण गुप्त
माता का नाम	काशीबाई
गुरु	महावीरप्रसाद द्विवेदी
कृतियां	भारत भारती, साकेत, यशोधरा, पंचवटी, द्वापर, जयद्रथ वध आदि
नागरिकता	भारतीय
साहित्य में योगदान	अपने काव्य में राष्ट्रीय भावों की गंगा बहाने का श्रेय गुप्ता जी को है। द्विवेदी युग के यह अनमोल रतन रहे हैं।
मुख्य रचना	साकेत

जीवन परिचय :- राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म झांसी जिले के **चिरगांव नामक** स्थान पर **1886 ई.** में हुआ था। इनके पिता जी का नाम सेठ रामचरण गुप्त और माता का नाम काशीबाई था। इनके पिता को हिंदी साहित्य से विशेष प्रेम था, गुप्त जी पर अपने पिता का पूर्ण प्रभाव पड़ा। इनकी प्राथमिक शिक्षा चिरगांव तथा

माध्यमिक शिक्षा मैकडोनल हाईस्कूल (झांसी) से हुई। घर पर ही अंग्रेजी, बंगला, संस्कृत एवं हिंदी का अध्ययन करने वाली गुप्त जी की प्रारंभिक रचनाएं कोलकाता से प्रकाशित होने वाले **वैश्योपकारक** नामक पत्र में छपती थी। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के संपर्क में आने पर उनके आदेश, उपदेश एवं स्नेहमय परामर्श से इनके काम में पर्याप्त निखार आया। भारत सरकार ने इन्हें **पदमभूषण** से सम्मानित किया। **12 दिसंबर 1964** को मां भारती का सच्चा सपूत सदा के लिए पंचतत्व में विलीन हो गया

साहित्यिक परिचय :- गुप्ता जी ने खड़ी बोली के स्वरूप के निर्धारण एवं विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। गुप्ता जी की प्रारंभिक रचनाओं में इतिवृत्त कथन की अधिकता है। किंतु बाद की रचनाओं में लाक्षणिक वैचित्र्य एवं सुक्ष्म मनोभावों की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। गुप्त जी ने अपनी रचनाओं में प्रबंध के अंदर गीतिकाव्य का समावेश कर उन्हें उत्कृष्टता प्रदान की है। गुप्ता जी की चरित्र कल्पना में कहीं भी अलौकिकता के लिए स्थान नहीं है। इनके सारे चरित्र मानव हैं उनमें देव एवं दानव नहीं है। इनके राम,कृष्ण, गौतम आदि सभी प्राचीन और चिरकाल से हमारी श्रद्धा प्राप्त किए हुए पात्र हैं। इसलिए वे जीवन पर ना और स्फूर्ति प्रदान करते हैं। साकेत के राम ईश्वर होते हुए भी तुलसी की भांति आराध्य नहीं, हमारे ही बीच के एक व्यक्ति हैं

कृतियां (रचनाएं) :- गुप्तजी ने लगभग 40 मौलिक काव्य ग्रंथों में भारत भारती (1912), रंग में भंग (1909), जयद्रथ वध, पंचवटी, झंकार, साकेत, यशोधरा, द्वापर, जय भारत, विष्णु प्रिया आदि उल्लेखनीय हैं।

भारत भारती मे हिंदी भाषियों में जाति और देश के प्रति गर्व और गौरव की भावना जगाई। **रामचरितमानस** के पश्चात हिंदी में राम काव्य का दूसरा प्रसिद्ध उदाहरण **साकेत** है। **यशोधरा** और **साकेत** मैथिलीशरण गुप्त ने दो नारी प्रधान काव्य की रचना की।

भाषा शैली :- हिंदी साहित्य में खड़ी बोली को साहित्यिक रूप देने में गुप्त जी का महत्वपूर्ण योगदान है। गुप्त जी की भाषा में माधुर्य भाव की तीव्रता और प्रयुक्त शब्दों का सुंदर अद्भुत है।

वे गंभीर विषयों को भी सुंदर और सरल शब्दों में प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त थे। इनकी भाषा में लोकोक्तियां एवं मुहावरे को के प्रयोग से जीवंतता आ गई है। गुप्तजी मूलत: प्रबन्धकार थे, लेकिन प्रबंध के साथ-साथ मुक्तक, गीति, गीतिनाट्य, नाटक आदि क्षेत्र में भी उन्होंने अनेक सफलताएं की हैं। इनकी रचना **पत्रावली** पत्र शैली में रचित नूतन काव्य शैली का नमूना है। इनकी शैली में गेयता, प्रवाहमयता एवं संगीतत्मकता विद्यमान है।

हिंदी साहित्य में स्थान :- मैथिलीशरण गुप्त जी की राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत रचनाओं के कारण हिंदी साहित्य में इनका विशेष स्थान है। हिंदी काम राष्ट्रीय भावों की पुनीत गंगा को बहाने का श्रेय गुप्तजी को ही हैं। अतः ये सच्चे अर्थों में लोगों में राष्ट्रीय भावनाओं को भरकर उनमें जनजागृति लाने वाले राष्ट्रकवि हैं। इनके काव्य हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है।

राष्ट्रप्रेम गुप्त जी की कविता का प्रमुख स्वर है। भारत भारती में प्राचीन भारतीय संस्कृति का प्रेरणाप्रद चित्रण हुआ है। इस रचना में व्यक्त स्वदेश प्रेम ही इनकी पर्वती रचनाओं में राष्ट्रप्रेम और नवीन राष्ट्रीय भावनाओं में परिणत हो गया। उनकी कविता में आज की समस्याओं और विचारों के स्पष्ट दर्शन होते हैं। गांधीवाद तथा कहीं-कहीं आर्य समाज का प्रभाव भी उन पर पड़ा है। अपने काव्य की कथावस्तु गुप्ता जी ने आज के जीवन से ना लेकर प्राचीन इतिहास अथवा पुराणों से ली है। यह अतीत की गौरव गाथाओं को वर्तमान जीवन के लिए मानवतावादी एवं नैतिक प्रेरणा देने के उद्देश्य से ही अपना आते हैं।

मृत्यु

मैथिलीशरण गुप्त जी पर गांधी जी का भी गहरा प्रभाव पड़ा था इसलिए उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लिया और कारावास की यात्रा भी की थी। यह एक सच्चे राष्ट्र कवि भी थे। इनके काम हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि माने जाते हैं। महान ग्रंथ **भारत भारती** में इन्होंने भारतीय लोगों की जाती और देश के प्रति गर्व और गौरव की भावना जताई है। अंतिम काल तक राष्ट्र सेवा में अथवा काव्य साधना में लीन रहने वाले और राष्ट्र के प्रति अपनी रचनाओं को समर्पित करने वाले राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी 12 दिसंबर सन 1964 ईस्वी को अपने राष्ट्र को अलविदा कह गए।

मातृभूमि / मैथिलीशरण गुप्त

नीलांबर परिधान हरित तट पर सुन्दर है।
सूर्य-चन्द्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है॥
नदियाँ प्रेम प्रवाह, फूल तारे मंडन हैं।
बंदीजन खग-वृन्द, शेषफन सिंहासन है॥
करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेष की।

हे मातृभूमि! तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की॥
जिसके रज में लोट-लोट कर बड़े हुये हैं।
घुटनों के बल सरक-सरक कर खड़े हुये हैं॥
परमहंस सम बाल्यकाल में सब सुख पाये।
जिसके कारण धूल भरे हीरे कहलाये॥
हम खेले-कूदे हर्षयुत, जिसकी प्यारी गोद में।
हे मातृभूमि! तुझको निरख, मग्न क्यों न हों मोद में?
पा कर तुझसे सभी सुखों को हमने भोगा।
तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा?
तेरी ही यह देह, तुझी से बनी हुई है।
बस तेरे ही सुरस-सार से सनी हुई है॥
फिर अन्त समय तू ही इसे अचल देख अपनायेगी।
हे मातृभूमि! यह अन्त में तुझमें ही मिल जायेगी॥
निर्मल तेरा नीर अमृत के से उत्तम है।
शीतल मंद सुगंध पवन हर लेता श्रम है॥
षट्ऋतुओं का विविध दृश्ययुत अद्भुत क्रम है।
हरियाली का फर्श नहीं मखमल से कम है॥
शुचि-सुधा सींचता रात में, तुझ पर चन्द्रप्रकाश है।
हे मातृभूमि! दिन में तरणि, करता तम का नाश है॥
सुरभित, सुन्दर, सुखद, सुमन तुझ पर खिलते हैं।
भाँति-भाँति के सरस, सुधोपम फल मिलते है॥
औषधियाँ हैं प्राप्त एक से एक निराली।
खानें शोभित कहीं धातु वर रत्नों वाली॥
जो आवश्यक होते हमें, मिलते सभी पदार्थ हैं।
हे मातृभूमि! वसुधा, धरा, तेरे नाम यथार्थ हैं॥
क्षमामयी, तू दयामयी है, क्षेममयी है।
सुधामयी, वात्सल्यमयी, तू प्रेममयी है॥
विभवशालिनी, विश्वपालिनी, दुःखहर्त्री है।

renaissance
renaissance

भय निवारिणी, शान्तिकारिणी, सुखकर्त्री है॥
हे शरणदायिनी देवि, तू करती सब का त्राण है।
हे मातृभूमि! सन्तान हम, तू जननी, तू प्राण है॥
जिस पृथ्वी में मिले हमारे पूर्वज प्यारे।
उससे हे भगवान! कभी हम रहें न न्यारे॥
लोट-लोट कर वहीं हृदय को शान्त करेंगे।
उसमें मिलते समय मृत्यु से नहीं डरेंगे॥
उस मातृभूमि की धूल में, जब पूरे सन जायेंगे।
होकर भव-बन्धन- मुक्त हम, आत्म रूप बन जायेंगे॥

प्रश्न 1.

धरती का परिधान क्या है?

उत्तर:

नीलांबर।

प्रश्न 2.

मातृभूमि का मुकुट क्या है?

उत्तरः

सूर्य और चंन्द्र मातृभूमि के मुकुट है।

प्रश्न 3.

मातृभूमि का करधनी क्या है?

उत्तरः

मातृभूमि का करधनी समुद्र है।

प्रश्न 4.

कौन मातृभूमि के स्तुति गीत गाते है?

उत्तरः

पक्षियों का समूह।

प्रश्न 5.

कवि अपनी मातृभूमि के लिए क्या करना चाहते हैं?

उत्तरः

कवि अपनी मातृभूमि के लिए आत्मसमर्पण करना चाहते हैं।

प्रश्न 6.

कवि कैसे बड़े हुए हैं?

उत्तरः

इस धरती की धूली में लोट-लोट कर बड़े हुए है।

प्रश्न 7.

कवि पैरों पर खडा रहना कैसे सीखा है?

उत्तरः

इस धरती में घुटनों के बल पर रेंगकर पैरों पर खड़ा रहना सीखा।

प्रश्न 8.

इसके रचनाकार कौन है? (आनंद बख्शी, कुँवर नारायण, मैथिलीशरण गुप्त, जगदीश गुप्त

उत्तरः

मैथिलीशरण गुप्त

प्रश्न 9.

“रत्नाकर’ शब्द का समानार्थी शब्द कोष्ठक से चुनकर लिखें। (नदी, समुद्र, तालाब, नाला)

उत्तरः

समुद्र

प्रश्न 10.

मातृभूमि के आभूषण क्या-क्या हैं?

उत्तरः

नीलांबर, सूर्य-चन्द्र युग, रत्नाकर, नदियाँ, फूल तारे, खग – वृंद, शेषफन आदि मातृभूमि के आभूषण है।

प्रश्न 11

कवि की राय में भारवासियों की देह किससे बनी हुई है?

उत्तरः

मातृभूमि से/ मिट्टी से

प्रश्न 12

तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा? ऐसा क्यों कहा गया है?

उत्तरः

मातृभूमि माँ के समान है। जिस प्रकार माँ की ममता का प्रत्युपकार कर नहीं सकता है उसी प्रकार मातृभूमि का भी प्रत्युपकार हम नहीं कर सकते। मातृभूमि का स्थान हम मानव से भी श्रेष्ठ है।

प्रश्न 13.

मातृभूमि किसकी सगुण मूर्ति है? (ईश्वर की, माता की, गुरु की)

उत्तरः

ईश्वर की

प्रश्न 14.

मातृभूमि का मुकट क्या है?

उत्तरः

सूर्य और चंद्र

प्रश्न 15.

कवि मातृभूमि पर बलिहारी होता है। क्यों?

उत्तरः

मातृभूमि और प्रकृति में अटूट संबंध है। इसलिए कवि मातृभूमि को ईश्वर की सगुण मूर्ति मानता है और मातृभूमि पर बलिहारी होता हैं।

प्रश्न 16.

'मातृभूमि' किस युग की कविता है? (द्विवेदी युग, छायावादी युग, प्रगतिवादी युग)

उत्तरः

द्विवेदी युग

प्रश्न 17.

'धुलि' का समानार्थी शब्द कवितांश से ढूँढ़ें। (सनी, बनी, मिली)

उत्तरः

सनी

प्रश्न 18.

'तेरा प्रस्तुपकार कभी क्या हमसे होगा' – कवि ऐसा क्यों कहता है?

उत्तरः

हमारा सबकुछ मातृभूमि से मिली है। यह देह, यह जीवन और अंत में हमें स्वीकार करनेवाला भी मातृभूमि है। इसलिए कवि ऐसा कहता है।

प्रश्न 19.

कवि एवं काव्यधारा का परिचय देते हुए कवितांश की आस्वादन टिप्पणी लिखें।

उत्तरः

प्रस्तुत पंक्तियाँ द्विवेदी युग के प्रसिद्ध कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त द्वारा लिखा गया है। देशप्रेम, वीरता, प्रकृति चित्रण आदि इस समय के विशेषताएँ है। खड़ी बोली का विकास भी इस काल में हुआ है। साकेत पंचवटी यशोधरा आदि गुप्त जी के प्रसिद्ध रचनायें हैं।

Chapter -2

मुंशी प्रेमचंद जी का जीवन परिचय, कार्यक्षेत्र, रचनाएँ तथा भाषा शैली

जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी के निकट लमही गाँव में हुआ था। उनकी माता का नाम आनंदी देवी था तथा पिता मुंशी अजायबराय लमही में डाकमुंशी थे। उनकी शिक्षा का आरंभ उर्दू, फारसी से हुआ और जीवन-यापन का अध्यापन से। पढ़ने का शौक उन्हें बचपन से ही था। 13 साल की उम्र में ही उन्होंने तिलिस्मे होशरूबा पढ़ लिया और उन्होंने उर्दू के मशहूर रचनाकार रतननाथ 'शरसार', मिरजा रुसबा और मौलाना शरर के उपन्यासों से परिचय प्राप्त कर लिया। 1898 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे एक स्थानीय विद्यालय में शिक्षक नियुक्त हो गए। नौकरी के साथ ही उन्होंने पढ़ाई जारी रखी।

1910 में उन्होंने अंग्रेजी, दर्शन, फारसी और इतिहास विषय से इंटर पास किया और 1919 में बी०ए० पास करने के बाद शिक्षा विभाग के इंस्पेक्टर पद पर नियुक्त हुए। सात वर्ष की अवस्था में उनकी माता तथा चौदह वर्ष की अवस्था में पिता का देहांत हो जाने के कारण उनका प्रारंभिक जीवन संघर्षमय रहा। उनका पहला विवाह उन दिनों की परंपरा के अनुसार पंद्रह साल की उम्र में हुआ, जो सफल नहीं रहा। वे आर्य समाज से प्रभावित रहे, जो उस समय का बहुत बड़ा धार्मिक और सामाजिक आंदोलन था। उन्होंने विधवा-विवाह का समर्थन किया और 1906 में दूसरा विवाह अपनी प्रगतिशील परंपरा के अनुरूप बाल-विधवा शिवरानी देवी से किया। उनकी तीन संतानें हुई – श्रीपत

राय, अमृत राय और कमला देवी श्रीवास्तव। 1910 में उनकी रचना 'सोजे-वतन' (राष्ट्र का विलाप) के लिए हमीरपुर के जिला कलेक्टर ने तलब किया और उन पर जनता को भड़काने का आरोप लगाया। सोजे-वतन की सभी प्रतियाँ जब्त कर नष्ट कर दी गईं। कलेक्टर ने नवाबराय को हिदायत दी कि अब वे कुछ भी नहीं लिखेंगे, यदि लिखा तो जेल भेज दिया जाएगा।

इस समय तक प्रेमचंद, धनपतराय नाम से लिखते थे। सन् 1915 ई० में इन्होंने महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा पर 'प्रेमचंद' नाम धारण करके, हिंदी-साहित्य जगत में पदार्पण किया। जीवन के अंतिम दिनों में वे गंभीर रूप से बीमार पड़े। अक्टूबर 1936 में उनका निधन हो गया। उनका अंतिम उपन्यास 'मंगलसूत्र' उनके पुत्र अमृत ने पूरा किया।

कार्यक्षेत्र

प्रेमचंद आधुनिक हिंदी कहानी के पितामह माने जाते हैं। वैसे तो उनके साहित्यिक जीवन का आरंभ 1901 से हो चुका था, पर उनकी पहली हिंदी कहानी सरस्वती पत्रिका के दिसंबर अंक में 1915 में, 'सौत' नाम से प्रकाशित हुई और 1936 में अंतिम कहानी 'कफन' नाम से। बीस वर्षों की इस अवधि में उनकी कहानियों के अनेक रंग देखने को मिलते हैं। उनसे पहले हिंदी में काल्पनिक, एय्यारी और पौराणिक धार्मिक रचनाएँ ही की जाती थी। प्रेमचंद ने हिंदी में यथार्थवाद की शुरूआत की। भारतीय साहित्य का बहुत-सा विमर्श जो बाद में प्रमुखता से उभरा, चाहे वह दलित साहित्य हो या नारी साहित्य, उसकी जड़ें कहीं गहरे प्रेमचंद के साहित्य में दिखाई देती हैं। प्रेमचंद नाम से उनकी पहली कहानी 'बड़े घर की बेटी', 'जमाना' पत्रिका के दिसंबर 1910 के अंक में प्रकाशित हुई। मरणोपरांत उनकी कहानियाँ मानसरोवर नाम से 8 खंडों में प्रकाशित हुईं। कथा सम्राट प्रेमचंद का कहना था कि साहित्यकार देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है। यह बात उनके साहित्य में उजागर हुई है। 1921 में उन्होंने महात्मा गाँधी के आह्वान पर अपनी नौकरी छोड़ दी। कुछ महीने 'मर्यादा' पत्रिका का संपादन भार सँभाला, छह साल तक 'माधुरी' नामक पत्रिका का संपादन किया, 1930 में बनारस से अपना मासिक पत्र 'हंस' शुरू किया और 1932 के आरंभ में 'जागरण' नामक एक साप्ताहिक पत्र और निकाला। उन्होंने लखनऊ में 1936 में अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के सम्मेलन की अध्यक्षता की।

रचनाएँ

प्रेमचंद ने कथा-साहित्य के क्षेत्र में युगांतकारी परिवर्तन किए और एक नए कथा-युग का सूत्रपात किया। जनता की बात जनता की भाषा में कहकर तथा अपने कथा-साहित्य के माध्यम से तत्कालीन निम्न एवं मध्यम वर्ग की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करके वे भारतीयों के हृदय में समा गए और भारतीय साहित्य जगत में 'उपन्यास सम्राट' की उपाधि से विभूषित हुए।

प्रेमचंद ने कहानी, नाटक, जीवन-चरित और निबंध के क्षेत्र में भी अपनी प्रतिभा का अभूतपूर्व परिचय दिया।

अ) उपन्यास – कर्मभूमि, कायाकल्प, निर्मला, प्रतिज्ञा, प्रेमाश्रम, वरदान, सेवासदन, रंगभूमि, गबन, गोदान और मंगलसूत्र (अपूर्ण)

(ब) कहानी संग्रह – नवनिधि, ग्राम्य जीवन की कहानियाँ, प्रेरणा, कफन, कुत्ते की कहानी, प्रेम-प्रसून, प्रेम-पचीसी, प्रेम-चतुर्थी, मनमोदक, मानसरोवर (दस भाग), समर-यात्रा, सप्त-सरोज, अग्नि-समाधि, प्रेम-गंगा और सप्त- सुमन

(स) नाटक – कर्बला, प्रेम की वेदी, संग्राम और रूठी रानी

(द) जीवन-चरित – कलम, तलवार और त्याग, दुर्गादास, महात्मा शेखसादी और राम-चर्चा

(य) निबंध-संग्रह – कुछ विचार

(र) संपादित – गल्प-रत्न और गल्प-समुच्चय

(ल) अनूदित – अहंकार, सुखदास, आजाद-कथा, चाँदी की डिबिया, टॉलस्टाय की कहानियाँ और सृष्टि का आरंभ

भाषा शैली

प्रेमचंद जी की भाषा के दो रूप हैं- एक रूप तो जिसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों की प्रधानता है और दूसरा रूप जिसमें उर्दू, संस्कृत और हिंदी के व्यावहारिक शब्दों का प्रयोग किया गया है। इसी भाषा का प्रयोग इन्होंने अपनी श्रेष्ठ कृतियों में किया है। यह भाषा अधिक सजीव, व्यावहारिक और

प्रवाहमयी है। यही भाषा प्रेमचंद जी की प्रतिनिधि भाषा है। प्रेमचंद जी ने अपने साहित्य की रचना जनसाधारण के लिए की। इसी कारण उन्होंने सरल, सजीव एव सरस शैली में ही अपनी रचनाओं का सृजन किया। वे विषय एवं भावों के अनुरूप शैली को परिवर्तित करने में दक्ष थे। प्रेमचंद जी ने अपने साहित्य में निम्नलिखित शैलियों का प्रयोग किया है-

(अ) वर्णनात्मक शैली – किसी पात्र, वस्तु, घटना आदि का वर्णन करते समय इस शैली का प्रयोग किया गया है। नाटकीय सजीवता इनके द्वारा प्रयुक्त इस शैली की प्रमुख विशेषता है।

(ब) विवेचनात्मक शैली – प्रेमचंद जी ने अपने गंभीर विचारों को व्यक्त करने के लिए विवेचनात्मक शैली को अपनाया है। इस शैली में संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग अधिक किया गया है।

(स) मनोवैज्ञानिक शैली – प्रेमचंद जी ने मन के भावों तथा पात्रों के मन में उत्पन्न अंतर्द्वंद्वों को चित्रित करने के लिए इस शैली का प्रयोग किया है।

(द) हास्य-व्यंग्यात्मक शैली – सामाजिक विषमताओं का चित्रण करते समय इस शैली का प्रभावपूर्ण प्रयोग किया गया है।

(य) भावनात्मक शैली – काव्यात्मक एवं आलंकारिकता पर आधारित इनकी इस शैली के अंतर्गत मानव जीवन से संबंधित विभिन्न भावनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है।

साहित्यिक योगदान

कथा साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद युगांतकारी परिवर्तन करने वाले कथाकार तथा भारतीय समाज के सजग प्रहरी व एक सच्चे प्रतिनिधि-साहित्यकार थे। डा० द्वारिका प्रसाद सक्सेना ने लिखा है- "हिंदी साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद का आगमन एक ऐतिहासिक घटना थी। उनकी कहानियों में ऐसी घोर यंत्रणा, दुःखद गरीबी, असप्त दुःख, महान स्वार्थ और मिथ्या आडंबर आदि से तड़पते हुए व्यक्तियों की अकुलाहट मिलती है, जो हमारे मन को कचोट जाती है और हमारे हृदय में टीस पैदा कर देती है।" तैंतीस वर्षों के रचनात्मक जीवन में वे साहित्य की ऐसी विरासत सौंप गए, जो गुणों की दृष्टि से

अमूल्य है और आकार की दृष्टि से असीमित। एक श्रेष्ठ कथाकार और उपन्यास सम्राट के रूप में हिंदी-साहित्याकाश में उदित इस 'चंद्र' को सदैव नमन किया जाता रहेगा।

शतरंज के खिलाड़ी

1) इस **कहानी** का **मुख्य पात्र** कौन है ?

इस कहानी का मुख्य पात्र मीर और मिरजा है।

2) इस कहानी में कहानीकार **पराधीन भारत का कौनसा और क्या चर्चा** करते है ?

इस कहानी में कहानीकार पराधीन भारत का एक प्रमुख सत्ता - केंद्र लखनऊ के सामाजिक - राजनितिक वातावरण का चर्चा करते है। जिसमे शासक - वर्ग से लेकर आम जनता का अय्याशी में डूबे रहने के बारे में बताते है।छोटे - बड़े , सभी नाच - गाने , पहनने - ओढ़ने , मनोरंजन - नशे में मस्त है।शासक वर्ग से शुरू हुआ यह अय्याशी जीवन आम जनता को भी लुबा चूका है और अकर्मण्य बना चूका है।

3) उनका **तर्क क्या होता** था ?

उनका तर्क होता था की शतरंज , ताश , गंजीफा खेलने से बुद्धि तीव्र होती है, विचार शक्ति का विकास होता है और पेचीदा मसलो का सुलझाने की आदत पड़ती है।

4) शतरंज का **खेल खेलने का लाभ** मीर मीरजा क्या बताते हैं ?

मीर मिरज़ा का मानना था कि शतरंज का खेल से बुद्धि तीव्र (तेज) होती है ।

5) शतरंज के खिलाड़ी के माध्यम से **प्रेमचंद क्या संदेश** देना चाहते हैं ?

जितना मीर और मिरज़ा अपना दिमाग शतरंज खेलने में लगाते हैं उतना अगर देश के बचाव में लगाते तो यह गुलाम कभी नहीं होता ।

6) **कोई योगी भी समाधि में इतना एकाग्र न होगा** - का आशय समझाइए

इस वाक्य में मीर और मिर्जा की शतरंज के प्रति दीवानगी बताई है खेलने मैं इतनी एक आग्रह जितना कि कोई समाधि में योगी न हो ।

7)शतरंज, गंजीफा ,ताश आदि खेलने के प्रति लोगों की क्या धारणा थी ?

शतरंज, गंजीफा,ताश खेलने के प्रति यह धारणा थी कि इनके खेलने से बुद्धि तेज होती है।

मिरज़ा सज्जाद अली और मीर रौशन अली को **धन अर्जित करने की क्यों चिंता नहीं** थी?

मिरज़ा सज्जाद अली और मीर रौशन अली को धन अर्जित करने की चिंता इसलिए नहीं थी क्योंकि दोनों के पास मौरूसी जागिरदारी थी।

8)मोहल्ले के **नौकर चाकर शतरंज के खेल के बारे** में क्या कहते थे ?

मोहल्ले के नौकर चाकर इस खेल को मनहूस खेल बताया करते थे। कहते थे कि यह घर को तबाह कर देता है और इनकी यह आदत किसी और को न लगे।

9)मिरजा की बेगम कि इस खेल के बारे में क्या धारणा थी ?

मिरज़ा की बेगम को इस खेल से बहुत द्वेष (गुस्सा) था। इसी कारण वह अक्सर खोज खोज कर अपने पति को डांटा करती थी।

10) बेगम के सिर दर्द होने पर **मिरज़ा क्यों नहीं घर के भीतर** आए ?

मिरजा उस समय मीर साहब के साथ शतरंज खेलने में रमे हुए थे इसलिए उन्होंने बुलवाए पर कोई ध्यान नहीं दिया।

11) मीर के घर कौन और क्यों उन्हें पूछता हुआ आ पहुंचा ?

मिरजा के घर बैठकर जब शतरंज खेल रहे थे। तभी 1 दिन वहां बादशाही फौज अवसर उन्हें मीर को पूछा हुआ आ पहुंचा। मीर साहब के तो होश उड़ गए। घर के दरवाजे से नौकर से कहलवा दिया की वह घर पर नहीं है। पर वह कल फिर आने की बात कहकर चले गए। पूछने पर पता चला कि उन्हें सेना में भर्ती करना है।

12) अ**मीर और मिरजा गोमती के किनारे शतरंज** खेलने का निर्णय क्यों लिया ?

1 दिन मीर साहब के घर एक बादशाही फौज का अफसर उन्हें अपने साथ ले जाने आया इससे डरकर दोनों दोस्तों ने गोमती के किनारे शतरंज खेलने का निर्णय लिया।

13) कहानी में **प्रजा और राजा की स्थिति** कैसी है ?

कहानी में प्रजा और राजा की दुख भरा है। प्रजा विशेष रूप से गाँव में रहने वाले किसानों से कर (पैसे) के रूप में वसूला जाता था और धन लखनऊ के नवाबों और दरबारियों की झूठी शान और शौकत और उनकी मजे में खर्च कर दिए जाते थे और उन्हें गरीब जनता की फिक्र नहीं थी।

14) मिरजा के चरित्र का विशेषता बताइए

मिरजा के पास जागीरदारी थी। धन की कोई कमी नहीं थी। मिरजा साहब को न अपने परिवार की चिंता थी और न लखनऊ की जनता की। उन्हें अपने बादशाह के बंदी बन जाने की चिंता भी नहीं थी। वह अपने शतरंज के साथ आराम और सुविधा के साथ रहना चाहते थे। मिरजा का जो व्यक्तित्व सामने आता है वह उनके कायर, संवेदनाहीन ,देश के प्रति उपेक्षा, स्वार्थी और झूठी शान पर जीने वाला दिखते है।

15) मीर के चरित्र की विशेषता बताइए

मीर साहब शतरंज खेलने के शौकीन थे। परिवार ,समाज, देश उनके लिए कोई मायने का नहीं था। वे पूरे रूप से विलासी थे शतरंज की लत के कारण उनका स्वाभिमान नष्ट हो चुका था। मिरजा की पत्नी मीर को पसंद नहीं करती थी किंतु फिर भी वह मिरजा के घर जाना नहीं छोड़ते थे। मिरजा को उसकी पत्नी को दबाकर रखने की सलाह देते थे। मीर साहब डरपोक और कायर थे। मीर का व्यक्तित्व एक बेईमान, कायर, विलासी, झूठे शान में रहने वाले और स्वार्थी व्यक्ति का है।

16) मीर के घर कौन और क्यों उन्हें पूछता हुआ पहुंचा?

मिरजा के घर बैठकर जब शतरंज खेल रहे थे तभी एक दिन वहां बादशाही फौज अवसर उन्हें मीर को पूछता हुआ आ पहुंचा । मीर साहब के तो होश उड़ गए घर के दरवाजे से नौकर से कहलवा दिया कि घर पर नहीं है। पर वह कल फिर आने की बात कहकर चला गया। पूछने पर पता चला कि उन्हें सेना में भर्ती करना है।

17) मीर और मिरजा ने गोमती के किनारे शतरंज खेलने का निर्णय क्यों लिया?

एक दिन मीर साहब के घर एक बार शाही फौज का अवसर उन्हें अपने साथ ले जाने के लिए आया। इससे डरकर दोनों दोस्तों ने गोमती के किनारे शतरंज खेलने का निर्णय लिया।

18)' शतरंज के खिलाड़ी' कहानी के शीर्षक की सार्थकता(महत्त्व) पर विचार कीजिए।

शतरंज के खिलाड़ी' शीर्षक पढ़ते ही हमारे दिमाग में शतरंज खेलते लोगों की तस्वीर उभर जाती है। शतरंज एक दिमागी खेल है जिससे मोहरों(ठप्पा) की मदद से राजनीतिक चाले चलकर खिलाड़ी एक दूसरे को हराने का प्रयास करते हैं। राजनीति में भी इसी प्रकार चाले चलकर सत्ता हथियाने(हड़पना) का प्रयास किया जाता है।
'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी में मीर और मिरजा अपने समाज और देश के हालातों से कटकर शतरंज खेलने में मगन रहते हैं और इस प्रकार खेलते हैं मानो वे दोनों राजा हो एक दूसरे का राज्य हड़पना चाहते हैं । अंत में वे खेलते खेलते जगड पढ़ते हैं और एक दूसरे की हत्या कर देते हैं ।
यह कहानी बताती है कि मीर और मिरजा दोनों बुद्धिमान तथा बहादुर थे, किंतु फिर भी वे देश के हालातों में ,देश की स्वाधीनता में साथ ना दे कर अपनी विलासिता में डूबे रहते हैं। जिस प्रकार शतरंज के मोहरे बेजान राजा और राज्य को दर्शाते हैं, इसी प्रकार मीर और मिरजा अकर्मण्य बने रहते हैं।
19) मिर और मिरजा की मित्रता के सकारात्मक और नकारात्मक पक्षों का उल्लेख कीजिए।
मिर और मिरजा दोनों अच्छे मित्र थे । वह जागीरो के शासक थे तथा बुद्धिमान और बहादुर भी । उनकी मित्रता के सकारात्मक पक्ष से यह हो सकते हैं कि वे दोनों मिलकर यदि अपनी प्रजा की भलाई करते और बुद्धिमानी और बहादुरी को अपने शासक शाह के साथ जोड़ दे तो निश्चित ही वाजिदअली शाह गिरफ्तार नहीं होते और लखनऊ पर अंग्रेजों का शासन नहीं हो पाता। इन दिनों मित्रता से दोनों की शक्ति एक और एक ग्यारह बनकर समाज को मजबूत करती है।
इनकी मित्रता के नकारात्मक पहलू यह है कि दोनों विलासी होने तथा शतरंज मैं मोहर रखने के कारण आलसी हो गए। उन्हें देश और समाज से कोई लेना देना नहीं था। वह कर्तव्य विमुख(बदगुमान) होकर केवल अपने सुख को देखते
रहे जिसका परिणाम वाजिद अली शाह की गिरफ्तारी तथा लखनऊ की बर्बादी निकला।
20) जिसे आजीविका के लिए संघर्ष नहीं करना पड़ता उसके जीवन में कुछ विकृतियां(बिगाड़) आ जाती है" - कहानी के आधार पर इस कथन पर विचार कीजिए।
व्यक्ति को जीवन जीने के लिए काम करना पड़ता है तथा मेहनत और संघर्ष करना पड़ता है । लेकिन जो व्यक्ति सफल और संपन्न हो जाते हैं ,उन्हें संघर्ष नहीं करना पड़ता। इसलिए उनके पास समय और साधन दोनों होने के कारण उनका समय नहीं गुजरता और वह अलग-अलग शौक पाल लेते हैं । जो जीवन को गलत रास्ते में ले जाता है । मीर और मिरजा दोनों के पास जागीरे थी। इसी कारण में विलासी हो गए और उन्होंने अपने कर्तव्य को अनदेखा कर दिया और शतरंज खेलने लगे और वह आलसी हो गए। वे विवेकहीन (अनुचित) और कायर होकर अपने ही देश का विनाश देखते रहे।
21) 'शतरंज के खिलाड़ी ' कहानी के उद्देश्य पर विचार प्रस्तुत कीजिए।

'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी स्वाधीनता आंदोलन के समय की है। यह वह समय था जब देश को बहादुरों कि नहीं बुद्धिमान लोगों की जरूरत थी। लेकिन देश में अनेक नवाब ,छोटे राजा विलासिता में डूबे हुए थे या आपसी झगड़ों में लगे थे जिसके आधार पर यह कहानी लिखी गई है।

शतरंज एक ऐसा खेल है जिसमें बुद्धिमान खिलाड़ी ही जीत सकता है ।

मीर और मिरजा बुद्धिमान है परंतु विलासिता में डूबे हैं । यदि वे अपनी बुद्धिमानी का प्रयोग देश के लिए करते तो हमारा देश पराधीन(निर्भर) नहीं होता। प्रेमचंद यही कहना चाहते हैं कि हमें देश हित के लिए अपना आराम और

विलास को छोड़ देना चाहिए और अपने कर्तव्य को निभाना चाहिए। लेकिन अमीर और मिर्जा देश और समाज को भूल कर अपनी जिम्मेदारियों से मुंह मोड़ कर अपने मनोरंजन में लगे रहते हैं । उनकी बुद्धि का समाज को कोई हित या उपयोग नहीं होता । प्रेमचंद बताना चाहते हैं कि हमारा देश गुलाम क्यों हुआ ? किन स्थितियों ने अंग्रेजों को बढ़ावा दिया? एक वर्ग की दुष्ट प्रवृत्ति(झुकाव) और गलत मानसिकता न केवल दूसरे वर्ग को प्रभावित करती

है लेकिन देश के लिए भी घातक हो सकता है इसका परिणाम आने वाले अनेक पिंडियों को भुगतना पड़ सकता है । मिर और मिरजा जैसे लोग आपस में लड़कर अपनी बहादुरी दिखाते हैं लेकिन देश के लिए अपने कर्तव्य से मुंह मोड़ कर बैठ जाते हैं।

22) भारत में स्वाधीनता आंदोलन के संदर्भ में 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी के महत्व पर विचार कीजिए।

'शतरंज के खिलाड़ी" कहानी जिस युग के संदर्भ में रची गई है। उस समय भारत अंग्रेजों का गुलाम था तथा स्वाधीनता आंदोलन जोरों पर था। ऐसे समय में देश को साहसी और बुद्धिमान लोगों की जरूरत थी। शतरंज बुद्धिमान का खेल है, वे राजनीति अच्छे से समझ सकते हैं तथा देश की स्वतंत्रता में योगदान दे सकते हैं। इस समय भारत के शासन में नवाबों और छोटे राज्यों की भागीदारी थी ,लेकिन वे लोग अपने भोग विलास में उलझे हुए थे। मिरजा और मिर जैसे लोग बुद्धिमान थे। यदि वे अपने दिमाग को देश को बचाने के लिए लगाते तो देश को गुलाम होने से बचाया जा सकता था।

प्रेमचंद ने इस कहानी द्वारा स्वाधीनता आंदोलन से जुड़े नेता और जनता को यह सीख दी है कि देश और स्वतंत्रता वह जन कल्याण के लिए हमें अपने सुख चैन और विलासिता को दूर रख कर देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझना होगा। अमीर और मिर्जा अपने दायित्व और समाज के विलासिता का प्रतीक है। पर बुद्धि मानते लेकिन समाज और राष्ट्र के लिए उनकी बुद्धि का कोई उपयोग नहीं था। व्यक्ति का कोई भी शक्ति ,कोई भी कार्य तब तक सकारात्मक नहीं कहा जा सकता जब तक वह समाज के लिए उपयोग में ना आए । प्रेमचंद ने इस कहानी द्वारा जनता को चेतावनी दी है कि किन परिस्थितियों के कारण हम गुलाम है और यदि

हमें विदेशी शासन से मुक्त होना है तो अपने निजी स्वार्थों से ऊपर उठना होगा और संघर्ष करना होगा। वे कहते हैं कि हमें संकल्प करना होगा कि पहले देश का हित होगा बाकी सब बाद में तभी हमें स्वतंत्रता मिलेगी।

23) 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी में व्यक्त वातावरण की तुलना आज के वातावरण से करते हुए एक टिप्पणी लिखिए।

'शतरंज के खिलाड़ी' का वातावरण उस समय का है, जब देश अंग्रेजों का गुलाम था। वे जनता और शास्त्र(शिक्षा देना) को सभी पर अत्याचार करते थे। नवाब और राजा और जनता सभी विलासिता में डूबे हुए थे। किसी को भी देश की चिंता नहीं थी ।कोई नाच गाने में डूबा था तो कोई नशे में डूबा था। शासन, साहित्य, सामाजिक स्थिति, उद्योग, व्यवहार सभी में विलासिता मे डूबे थे। विदेशी शासकों के कारण देश की जनता को किसी प्रकार की आजादी नहीं थी । सभी को उनका हुकुम मानना पड़ता था।

आज का वातावरण उस समय से अलग है, आज हम स्वतंत्र है, अपने तरीके से जीवन जी सकते हैं । सुख सुविधा मौजूद है । किसी प्रकार का अत्याचार होने पर हम कानून का मदद ले सकते हैं। लोकतंत्र में खराब शासक को हटाने का अधिकार जनता रखती है। परंतु यह सब होते हुए भी भ्रष्टाचार है। शासक, नेता, सरकारी अधिकारी और जनता देश हित को छोड़कर अपनी निजी स्वार्थ में लगे हुए हैं । जिसका नतीजा है गरीबी, कुशासन, आतंकवाद, बेरोजगारी, महंगाई। यह सच है कि आज हम विदेशी शासन के गुलाम नहीं है, लेकिन नेताओं के स्वार्थ के कारण विदेशी निवेश धीरे-धीरे अपना पाव जमाते जा रहे हैं जो देश की स्वतंत्रता के लिए खतरा बन सकता है।

24) मिरजा और मीर के चरित्र की विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए।

मिरजा सज्जाद अली और मीर रौशन अली 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी के मुख्य पात्र हैं। दोनों के पास जागीरदारी थी । वे दोनों मित्र थे। पिता की संपत्ति के कारण उनके पास धन की कमी नहीं थी। इसी कारण दोनों काम छोड़ विलासी और कायर हो गए।

मिरजा साहब को ना अपने परिवार की चिंता थी ना लखनऊ की जनता कि ।उन्हें अपने बादशाह के बंदी(क़ैदी) बन
जाने का भी चिंता नहीं था। वह अपनी शतरंज के साथ अपने आराम में लगे थे। वह अपनी सुविधा और सुख नहीं छोड़ना चाहते थे।

लखनऊ की बिगड़ती हालत का उन पर कोई असर नहीं था ।

मीर साहब को भी मिरजा की तरह शतरंज खेलने और पान हुक्के से प्यार था। परिवार, समाज, देश उनके लिए कोई मायने नहीं रखते थे। वह पूरे विलासी थे। शतरंज की लत के कारण उनका स्वाभिमान नष्ट हो चुका

था। मिरजा की पत्नी मीर को पसंद नहीं करती लेकिन फिर भी वह मिरजा के घर जाना नहीं छोड़ते। वह मिरजा को उनकी पत्नी को दबाकर रखने की सलाह देते थे। मीर साहब डरपोक और कायर थे।

Chapter - 3

जीप पर सवार इल्लियाँ

शरद जोशी का जीवन परिचय

शरद जोशी ने सामाजिक परिवर्तनों, राजनीतिक और सांस्कृतिक उथल-पुथल को बड़ी बारीकी से समझा और देखा था। शरद जोशी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर गहरा असर पड़ा। शरद जोशी वर्तमान व्यवस्था से बहुत क्षुब्ध थे। वे स्वयं कदम-कदम पर दिखने वाले व्यवस्था के खोखलेपन को एक पल भी सहने के लिए तैयार नहीं होते थे। वे हमेशा व्यवस्था को बदलने की भावना एवं विचारों से उद्वेलित रहते थे। उनके विचारों में गहरा सच्चा और खरा अनुभव झलकता था। गहरे चिंतन मनन और परीक्षण के बाद उन्होंने अपनी आस्थाओं की बुनियाद डाली थी। विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए उन्होंने साहित्य और पत्रकारिता की सेवा की।

परिवार क्रम उज्जैन नगरी मालवा की संस्कार धानी है। यह महाकालेष्वर की पवित्र भूमि है यह भूमि साहित्य के लिए उर्वरा रही है। साहित्य के कई अनमोल रत्नों को इस भूमि ने जना और तराशा है। व्यंग्य कार और हिन्दी व्यंग्य के षिकार पुरुष व्यंग्यार्शि शरद जोशी का जन्म मध्य प्रदेश के उज्जैन शहर में 21 मई 1931 को हुआ था।
शरद जोशी के पिता श्री निवास जोशी मध्य प्रदेश रोडवेज में डिपों मैनेजनर के पद पर कार्यरत थे। शरद जोशी की माता-का नाम शांति था। उनके परिवार में शरद जोशी को मिलकर कुल 6 भाई-बहन थे। शरद जोशी की मृत्यु 5 सितम्बर 1991 मुंबई में हुई।

अपने परिवार के बारे में जानकारी देते हुए स्वयं शरद जोशी ने लिखा है- ‘‘हम कुल छः भाई-बहन हैं। सब एक-दूसरे से प्रकृति में अलग हैं। छोटे थे तो मारपीट करते थे। अब एक-दूसरे को बेवकूफ समझते हैं। सबका अपना व्यक्तित्व है, अपनी भाषा और अपना कार्यक्षेत्र। मेरी बड़ी बहन पार्थिव पूजे बिना खाना नहीं खाती और मेरे सामने कोई ईश्वर का नाम ले लें, तो

मूड ऑफ हो जाता है।" शरद जोशी के पिता सरकारी नौकरी में थे। वे जब तक शहर में अपने पाँव जमाते थे तब तक किसी दूसरे शहर में उनका तबादला हो जाता था।

शरद जोशी का परिवार मूलत: गुजराती परिवार है। इनका परिवार चार पीढ़ियों पहले गुजरात से मालवा आया था और इस परिवार में मालवी संस्कृति को अपने भीतर आत्मसात कर लिया था शरद जोशी के दादा, परदादा, उज्जैन में ही रहे।

'शरद जोशी' के बचपन का नाम 'बच्चू' था। उनके पिता श्री निवास जोशी उस समय रोडवेज में डिपो मैनेजर के पद पर कार्यरत थे। विभागीय कर्मचारियों का एक बहुत बड़ा हिस्सा उनकी देख-रेख में था कर्मचारी उन्हें बच्चू को छोटे मैनेजर साहब कहते थे। उनके दादा परदादा यहीं के बाशिंदे थे। शरद जोशी के पिता स्वयं सरकारी नौकरी में थे इसीलिए उनकी इच्छा थी कि घर का बड़ा बेटा यानी शरद जोशी भी सरकारी नौकरी करें।

शरद जोशी का जन्म एक ऐसे ब्राह्मण परिवार में हुआ था जहां जात-पांत और कर्मकाण्ड को बहुत ज्यादा महत्त्व दिया जाता था। उनके घर का का माहौल काफी अनुशासित था। कर्मकाण्डों ब्राह्मण परिवार में छुटपन में घर पर उनको कठोर नियंत्रण में रखा जा रहा था। शरद जोशी से यह अपेक्षा की जा रही थी कि वह दिन रात-खूब पढ़ाई करके क्लास में अब्बल आएं। उन्हें कोर्स के अतिरिक्त पुस्तकें पढ़ने की घर में इजाजत नहीं थी।

उन्होंने बचपन में प्रेमचन्द, शरदचन्द्र व देवकी नन्दन खत्री की पुस्तकों को अपने घरवालों से छुपाकर पढ़ा था। घर के बंदिशों वाले माहौल में वे एक प्रकार की घुटन महसूस किया करते थे। उन्हें अपने घर का माहौल किसी जेलखाने से कम नहीं लगता था। तब किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी कि जिस बच्चू को बचपन में कठोर अनुशासन और बंदिशों के बीच रखा गया है वह बड़ा होकर शरद जोशी के रूप में हिन्दी व्यंग्य साहित्य का महान लेखक साबित होगा।

शरद जोशी स्वभाव से हंसमुख, दृढ़-निष्चयी तथा स्वाभिमानी थे। पढ़ाई के सिलसिले में वे कभी उज्जैन, कभी नीमच कभी देवास, कभी महू तो कभी इंदौर भटकते रहे। शरद जोशी के शौक और व्यसन करीब-करीब एक जैसे थे। उन्हें किताबें पढ़ना-घूमना, बातचीत करना, पैसे खर्च करना, लिखना और खूब लिखते रहने का शौक था। शरद जोशी बचपन से लिखते रहे थे। जोशी के परिवार में पाठ्य पुस्तकों के अलावा कुछ भी पढ़ने या लिखने की इजाजत नहीं थी शरद जोशी इस मामले में विद्रोही प्रकृति के साबित हुए।

उन्होंने बचपन से ही जमकर लिखना शुरू कर दिया। लिखने के शौक को घरवालों से छुपकर पूरा किया। बचपन में ही उनके लेख अखबारों और पत्रिकाओं में छपने लगे। कुछ समय "छदम्" नाम से भी लिखा। दोस्तों के साथ मिलकर हस्तलिखित पत्रिकाएँ निकाली शरद जोशी ने अपनी पहली कमाई लेखन से ही की थी। उन्होंने एक अखबार में लेख लिखा

था, और उन्हें मेहनताना मिला था। 1953 में शरद जोशी ने इदौर के दैनिक अखबार 'नई दुनिया' में एक स्तंभ लिखना शुरू किया।

शरद जोशी कहते हैं- ''जब मैं नई दुनिया इंदौर में सप्ताह में तीन की गति से कॉलम लिखताथा मुझे तीस रूपए प्रतिमाह मिलते थे अर्थात् माह में बारह कॉलम के प्रति कॉलम ढाई रूपए। कहानी लिखने पर बारह रूपए से बीस रूपया तक प्राप्त होते थे।'' 1953 में उन्होंने नई दुनिया इंदौर में ''परिक्रमा'' नामक स्तंभ लिखना शुरू कर दिया और एक युवा व्यंग्यकार के रूप में उभरे। 1957 में इन्हीं लेखों का संग्रह परिक्रमा के नाम से ही प्रकाशित हुआ। शुरूआती दौर में उन्होंने कहानियां भी लिखीं। 1955 में वे आकाशवाणी इंदौर में पांडुलिपि लेखक के रूप में काम करने लगे। 1956-66 के दौरान उन्होंने म0 प्र0 सूचना विभाग में सरकारी नौकरी की।

1960 के दषक में उन्होंने साप्ताहिक 'धर्मयुग' में ''बैठे ठाले,'' स्तंभ लिखना शुरू किया और व्यंग्य लेखन के क्षेत्र में उनका नाम महत्त्वपूर्ण हो गया। 1980 में वे 'हिन्दी एक्सप्रेस के संपादक बने लेकिन यह पत्रिका चल नहीं पाई। 1985 से वे नवभारत टाइम्स में 'प्रतिदिन' स्तंभ लिखते रहे। इससे पहले 'रविवार' दिनसार और अनेक पत्र-पत्रिकाओं में उन्होंने व्यंग्य लिखे।

शरद जोशी यथार्थवादी थे। उन्होंने सत्य स्थितियों से कभी मुंह नहीं मोड़ा वे अपने परिवार, मित्र लेखन, मंचीन पाठ तथा समाज के प्रति बेहद ईमानदार थे। वे बहुत ज्यादा संवेदनशील थे। उनके अनुभवों का आकाश बड़ा बिषाल था। इसलिए उनका स्वभाव भी सरल था। वे सच्चे प्रगतिशील थे। अपने जीवन में जितने साहसी निर्णय शरद जोशी लिए, उतना साहसी कदम उठाने की क्षमता बहुत कम लोगों में होती है। जो गलत हैं, उसे गलत कहने की हिम्मत शरद जोशी हमेशा जुटाए रहे। शरद जोशी का जन्म भले ही भरी गर्मियों में हुआ लेकिन हिन्दी साहित्य में शरद जोशी शीतल और मन को मोहने वाली बयार बनकर सबको हर्षित करते रहे। वे आजीवन लेखन के प्रति प्रतिबद्ध रहे।

आमतौर पर शरद जोशी अपनी किताबों में आत्मकथ्य, भूमिका या दो शब्द लिखना पसन्द नहीं करते थे। ''जादू की सरकार'' में उन्होंने अपने लेखन के बारे में लिखा है, ''लिखना मेरे लिए जिन्दगी जी लेने की एक तरकीब है। इतना लिख लेने के बाद अपने लिखे को देख मैं सिर्फ यही कह पाता हूँ कि चलो इतने वर्षों जी लिया। यह एक मुझे बढ़िया बहाना मिल गया। यह न होता तो इसका क्या विकल्प होता, अब सोचना कठिन है। लेखन मेरा एक निजी उद्देश्य है। कोई अब मुझे इससे बचा नहीं सकता मैं इससे बचकर जी भी नहीं सकता। चूंकि यह मेरे जीवन जीने का सहारा रहा है, इसलिए मेरी इससे कोई शिकायत नहीं है। मेरी सारी शिकायत स्वयं से अपने जीवन से और निरंतर लड़खड़ाते भाग्य से हो सकती है और प्रायः बेसबब हंस देने की आदत न होती तो शिकायत करता भी या उससे अधिक भी कुछ करता। पर धीरे-धीरे यह सब भी हंस कर टाल देने का मामला बन गया है, अब जीवन के आगे किसी प्रकार का विशेषण लगाना मुझे अजीब लगता है। चढ़-बढ़ कर यह कहा कि जीवन संघर्षमय रहा लेखक होने के कारण जिसे मैंने दु:खी-सुखी जिया, फिजूल है। जीवन

होता ही संघर्षमय है। किसका नहीं होता ? लिखने वाले का होता है तो क्या अजब होता है।

शरद जोशी की रचनाएँ

हिन्दी व्यंग्य साहित्य को शिखर तक पहुँचाने वाले व्यंग्यार्षि शरद जोशी का समस्त साहित्य व्यंग्यमय है। उन्होंने कहानी उपन्यास, निबंध और नाटक लिखे, सभी रचनाओं में व्यंग्य का निर्वाह किया। उन्होंने अपने व्यंग्य लेखन के माध्यम से राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक और प्रशासन की विकृतियों का पर्दाफाश किया है। एक तरफ से शरद जोशी का नाम तल्ख व्यंग्य का पर्याय बन गया। शरद जोशी की प्रकाशित कृतियाँ हैं-

1. परिक्रमा
2. किसी बहाने
3. जीप पर सवार इल्लियाँ
4. रहा किनारे बैठ
5. तिलस्म
6. दूसरी सतह
7. पिछले दिनों
8. मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ
9. यथासंभव
10. यथासमय
11. हम भ्रश्टन के भ्रष्ट हमारे
12. मुद्रिका रहस्य
13. दो व्यंग्य नाटक
14. जादू की सरकार
15. मैं, मैं और केवल मैं
16. प्रतिदिन
17. प्रतिदिन (समग्र तीन खण्ड)
18. यत्र तत्र सर्वत्र
19. झरता नीम, शाश्वत थीम
20. नाटक के तीर
21. भारत में जातिवाद एवं अन्य निबन्ध (अनुवाद)

शरद जोशी की अन्य रचनाएं "दूध पीने की कला", "कोई एक आएगा", "खतरा", ""ट्रिक"", जिसके हम मामा हैं, बिना शीर्षक, "संदेह से घिरी शराफत", "बदतेदिल" और "सोफों की ट्रेजेडी", शर्म- तुमको मगर आती है, "खोखला घर", बौद्धिक असहमति, अतृप्त आत्माओं की रेल यात्रा, तिलिस्मा मुद्रिका रहस्य, बुद्ध के दांत' हिटलर और आंचू तबाखू वाला, भगवान और मुर्गा, वर्जीनिया तुल्फ से सब डरते हैं, पुलिया पर बैठा आदमी, सारी बहस से गुजरकर, और 'कैसा जादू डाला', भी महत्त्वपूर्ण कहानियां हैं।

शरद जोशी ने लघु कथाएं भी लिखी हैं। शरद जोशी ने अपनी कहानियों में बहुत कम ही सही, पर ऐतिहासिक मिथकों का भी सहारा लिया है। शरद जोशी ऐतिहासिक पात्रों को आधार बनाकर भी कहानियाँ लिखते नजर आते हैं।

व्यंग्यकार सतत् जागरूक रहकर अपने परिवेश पर, जीवन और समाज की हर छोटी-सी-छोटी घटना पर तटस्थ भाव से दृष्टिपात करता है और उसके आभ्यंतरिक स्वरूप का निर्मम अनावरण करता है। इसीलिए व्यंग्यकार का धर्म अन्य विधाओं में लिखने वालों की अपेक्षा कठिन माना गया है, क्योंकि अपनी रचना प्रक्रिया में उसे बाह्य विषयों के प्रति ही नहीं, स्वयं अपने प्रति भी निर्मम होना पड़ता है। हिन्दी के सुपरिचित व्यंग्यकार शरद जोशी का यह संग्रह इस धर्म का पूरी मुस्तैदी से निर्वाह करता है। धर्म, राजनीति, सामाजिक जीवन, व्यक्तिगत आचरण - कुछ भी यहाँ लेखक की पैनी नज़र से बच नहीं पाया है और उनकी विसंगतियों का ऐसा मार्मिक उद्घाटन हुआ है कि पढ़ने वाला चकित होकर सोचने लगता है - अच्छा, इस मामूली सी दिखने वाली बात की असलियत यह है वास्तव में प्रस्तुत निबंध-संग्रह की एक-एक रचना शरद जोशी की व्यंग्य-दृष्टि का सबलतम प्रमाण है।

प्रश्न 1.

खेतों में इल्ली लगने का क्या कारण बताया?

उत्तर:

मौसम खराब रहने, वर्षा अधिक होने और ठंड बढ़ जाने से खेतों में इल्ली लग गयी।

प्रश्न 2.

लेखक को कृषि अधिकारी कहाँ ले गए?

उत्तर:

लेखक को कृषि अधिकारी इल्ली उन्मूलन की प्रगति दिखाने खेतों में ले गये।

प्रश्न 3.

किसान कब और क्यों घबराया?

उत्तर:

किसान छोटे अफसर के क्रोध को देखकर और खेत में इल्ली लगने का दोषी मानने पर घबराया उसे लगा कि उसका खेत जब्त हो जायेगा

प्रश्न 4.

अन्न की अधिष्ठात्री देवी कहा गया है-

(क) इला को

(ख) इल्ली को

(ग) नष्टार्थी देवी को

(घ) कृषि विभाग की गोष्ठी को

प्रश्न 5.

"मुझे खेतों में अच्छा लगता है। यहाँ सचमुच जीवन है, शान्ति है, सुख है।" किसने कहा-

(क) किसान ने

(ख) छोटे अफसर ने

(ग) बड़े अफसर ने

(घ) लेखक ने

उत्तर:

4. (क) 5. (ग)

प्रश्न 6.

पाठ के लेखक का नाम बताइए।

उत्तर:

पाठ के लेखक का नाम शरद जोशी है।

प्रश्न 7.

इल्लियों को किसकी पुत्री बताया गया है?

उत्तर:

इल्लियों को इला अर्थात् पृथ्वी की पुत्री बताया गया है।

प्रश्न 8.

किसान को जीप में क्या रखने को कहा गया?

उत्तर:

किसान को जीप में हरे चने की बूट रखने के लिए कहा गया।

प्रश्न 8.

जीप पर सवार तीन झल्लियाँ किन्हें बताया गया है?

उत्तर:

लेखक, बड़ा अफसर तथा छोटा अफसर-इन तीनों को जीप पर सवार इल्लियाँ बताया गया है।

प्रश्न 9.

अखबारों में किसकी तस्वीर छपी हुई थी ?

उत्तर:

अखबारों में चने के पौधे पर लगी इल्ली की सुन्दर तस्वीर छपी हुई थी।

प्रश्न 10.

कौन किसकी कमाई खाकर पब्लिसिटी लूट रही थी?

उत्तर:

इल्लियाँ अपनी जन्मदात्री पृथ्वी की कमाई खाकर अर्थात् चने की पौध को चटकर पब्लिसिटी लूट रही थीं।

प्रश्न 11.

अफसर को कौन-सी कविता याद थी?

उत्तर:

अफसर को मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित ग्रामजीवन पर लिखी गई कविता याद थी।

प्रश्न 12.

बड़े अफसर ने खेत में चहलकदमी करते हुए लेखक से क्या कहा?

उत्तर:

बड़े अफसर ने लेखक से कहा कि उसे खेतों में चहलकदमी करना अच्छा लगता है। यहाँ सचमुच जीवन, शान्ति और सुख है।

Unit -2

आचार्य रामचंद्र शुक्ल का जन्म

शुक्लजी बीसवीं शताब्दी के सबसे प्रसिद्ध साहित्यकार, निबंधकार, इतिहासकार, कवि, आलोचक आदि थे. हिंदी साहित्य का इतिहास जैसे रचना कर के वह भारतीय हिंदी साहित्य में सबसे प्रसिद्ध लेखक बन गए अचार्यजी बस्ती जिला के अगोना गांव के रहने वाले थे उनका जन्म 4 अक्टूबर 1884 को हुआ था.

हिंदी साहित्य के महान साहित्यकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल के पिता का नाम चंद्रबली शुक्ल था और उनकी माता का नाम निवासी देवी था उनके पिता मिर्जापुर में कानूनगो के पद पर नौकरी करते थे रामचंद्र शुक्ल जी के पिताजी का ख्वाहिश था

उनका सपना था कि उनका बेटा भी उन्हीं के तरह उसी विभाग में कानूनगो के पद पर नौकरी करे. रामचंद्र शुक्ल की माता भी एक विदुषी और धार्मिक स्त्री थी पूजा पाठ धार्मिक कार्यों में हमेशा लगी रहती थी.

नाम	आचार्य रामचंद्र शुक्ल
उपनाम	सरदार और लौह पुरूष
जन्म	4 अक्टूबर 1884
जन्म स्थान	बस्ती जिला के अगोना गांव
पिता का नाम	चंद्रबली शुक्ल
माता का नाम	निवासी देवी
रचनाएं	निबंधकार, अनुवादक, संपादक और आलोचक

renaissance

निबंध	चिंतामणि,विचार विधि
अनुवाद	मेगास्थनीज का भारतवर्षीय विवरण,आदर्श जीवन,कल्याण का आनंद,विश्व प्रपंच,बुद्धचरित इत्यादि
संपादन	तुलसी ग्रंथावली,जायसी ग्रंथावली,हिंदी शब्द सागर,नागरी प्रचारिणी पत्रिका,भ्रमरगीत सार,आनंद कादंबिनी
आलोचना	रस मीमांसा,त्रिवेणी
मृत्यु	1941
सम्मान	
मृत्यु	15 दिसंबर 1950

renaissance

अचार्य रामचंद्र शुक्ल की शिक्षा

रामचंद्र शुक्ला जब 4 साल के थे तभी अपने पिता के साथ हमीरपुर चले गए थे और उनकी शुरुआती पढ़ाई वहीं पर हुई थी उसके बाद कुछ दिनों के बाद उनके पिता की नौकरी मिर्जापुर सदर में कानूनगो के पद पर हो गई इस वजह से उनका पूरा परिवार मिर्जापुर आकर रहने लगा रामचंद्र शुक्ल जब 9 साल के थे

तभी उनके माता का मृत्यु हो गया इस वजह से उनका जीवन बड़ा दुखमय में हो गया था लेकिन उन्होंने मिशन स्कूल से मैट्रिक की पढ़ाई पूरी की उसके बाद इंटर की पढ़ाई के लिए वह इलाहाबाद चले गए .

इलाहाबाद से उन्होंने इंटर की पढ़ाई पूरी की इसके बाद उनके पिताजी उन्हें वकालत पढ़ने के लिए इलाहाबाद भेज दिया लेकिन रामचंद्र शुक्ला जी को वकालत की पढ़ाई में रुचि नहीं थी इस वजह से वह उत्तरीर्ण नहीं हो सके फिर शुक्लजी मिर्जापुर के ही मिशन स्कूल में अध्यापक के पद पर पढ़ाने लगे

आचार्य रामचंद्र शुक्ल को कई भाषाओं का ज्ञान था हिंदी संस्कृत अंग्रेजी उर्दू बंगला आदि. शुक्ला जी ने इंटर की पढ़ाई भी पूरी नहीं की बीच में ही किसी कारणवश उनकी पढ़ाई छूट गई.

जिसके बाद वह सरकारी नौकरी करने लगे लेकिन उसमें भी किसी तरह की परेशानी होने की वजह से आत्म स्वाभिमान की वजह से उन्होंने नौकरी छोड़ कर मिशन स्कूल में चित्रकला के अध्यापक के रूप में कार्य करने लगे और इसके साथ ही उन्होंने लेखन कार्य भी शुरू कर दिया जिसमें निबंध कहानी कविता नाटक आदि का रचना करने लगे.

उनके लिखे हुए रचनाएं पत्र-पत्रिकाओं में भी छपने लगे और नागरी प्रचारिणी सभा से जुड़कर शब्द सागर के सहायक संपादक के पद पर कार्य करने लगे थे कुछ दिनों बाद अचार्य रामचंद्र शुक्ला बनारस के काशी हिंदू विश्वविद्यालय हिंदी के अध्यापक नियुक्त किए गए.इसके बाद ही उनके साहित्यिक जीवन का शुरुआत हु

आचार्य रामचंद्र शुक्ल का साहित्यिक जीवन

शुक्ला जी ने पढ़ाई पूरी होने के बाद मिर्जापुर में मिशन स्कूल में अध्यापक के पद पर कार्य करने लगे इसके बाद उन्होंने लेख लिखना शुरू किया और उनका लेख पत्र-पत्रिकाओं में भी छपने लगा.

उनकी योग्यता देखकर उससे प्रभावित होकर काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने इन्हें शब्द सागर के संपादक का कार्य संभालने को कहा. उसके बाद उन्होंने नागरी प्रचारिणी पत्रिका के संपादन करना शुरू किया. वह एक ऐसे लेखक थे जिनके रचनाओं के बारे में भारतीय हिंदी साहित्य में आज भी चर्चाएं होती हैं.

हिंदी साहित्य का इतिहास लिख कर उन्होंने इतिहास रच दिया रामचंद्र शुक्ल जी के पिता चाहते थे की वो तहसील के दफ्तर में बैठकर काम करें लेकिन आचार्य जी को इस नौकरी में एकदम रुचि नहीं थी

रामचंद्र शुक्ल जी का लेख जो पत्रिकाओं में छपने लगा तो वह पूरे साहित्य जगत में मशहूर होते गए उसके बाद वो काशी के हिंदू विश्वविद्यालय में हिंदी के अध्यापक के पद पर भी काम किया .

रामचंद्र शुक्ल का व्यक्तित्व

अचार रामचंद्र शुक्ल हिंदी साहित्य जगत में कई अमूल्य कृतियों की रचना की उनका पूरा जीवन साहित्य की सेवा में ही बीत गया भारतीय हिंदी साहित्य जगत में उनकी पहचान एक अलग बन गई वह एक निबंधकार, संपादक, समालोचक, लेखक कवि आदि के रूप में प्रसिद्ध हो गए थे अपनी रचनाओं में अचार्य रामचंद्र शुक्ला कई भाषाओं का प्रयोग करते थे

जैसे कि शुद्ध साहित्यिक भाषा, व्यवहारिक भाषा, सरल भाषा, अरबी, फारसी, उर्दू आदि भी शब्द उनके रचनाओं में रहता था सबसे ज्यादा उनकी रचनाओं में संस्कृत के तत्सम शब्द का प्रयोग ज्यादा रहता था

ग्रामीण समाज में जिस तरह का बोलचाल भाषा बात करने का तरीका होता है छोटी-छोटी ग्रामीण भाषा होती है वह उनकी रचनाओं में ज्यादा होते थे उनकी रामचंद्र शुक्ल कि सबसे ज्यादा ख्याति उनकी प्रसिद्धि हिंदी साहित्य का इतिहास लिख करके मिली थी इस रचना के लिए उन्हें हिंदुस्तान अकादमी से 500 का पारितोषिक सम्मान भी प्राप्त हुआ था

स्कूल में अध्यापक का कार्य करते हुए भी उन्होंने अपनी रचनाएं की थी वह एक प्रसिद्ध निष्पक्ष आलोचक थे एक प्रसिद्ध निबंधकार थे एक सफल और प्रसिद्ध संपादक थे साथ ही एक बहुत ही प्रसिद्ध इतिहासकार भी थे.

आचार्य रामचंद्र शुक्ल की रचनाएं

आचार्य रामचंद्र शुक्ल की रचनाएं उच्च कोटि की होती थी शुक्ला जी निबंधकार तथा कवि के रूप में ज्यादा जाने जाते हैं इनकी सबसे प्रिय जो थी वह आलोचना थी इसी आलोचना के चलते इन्होंने अपना स्थान विशेष बना लिया है

शुक्लजी का गध के क्षेत्र में विशेष स्थान है उन्होंने निबंध अनुवाद आलोचक आदि की रचनाएं की हैं . उन्हें हिंदी के युग प्रवर्तक के रूप में भी जाना जाता है हिंदी साहित्य का इतिहास जिससे इतिहास में इनका लेखन बहुत सर्वश्रेष्ठ हो गया

उनकी कृतियां ऐतिहासिक सांस्कृतिक धार्मिक दार्शनिक एवं साहित्यिक विषय पर होती हैं. वह कई भाषाओं के ज्ञाता थे जैसे कि हिंदी, उर्दू, बांग्ला, संस्कृत, अंग्रेजी आदि. इन्होंने 19 साल तक नागरी प्रचारिणी सभा में हिंदी शब्द सागर के सहायक संपादक के पद पर रहे. इनकी प्रमुख रचनाएं कुछ इस तरह है.

1. निबंध

- चिंतामणि
- विचार विधि

2. आलोचना

- रस मीमांसा
- त्रिवेणी

3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी का इतिहास

हिंदी साहित्य का इतिहास

4. अनुवाद

- मेगास्थनीज का भारतवर्षीय विवरण
- आदर्श जीवन
- कल्याण का आनंद
- विश्व प्रपंच
- बुद्धचरित इत्यादि

5. संपादन

- तुलसी ग्रंथावली
- जायसी ग्रंथावली
- हिंदी शब्द सागर
- नागरी प्रचारिणी पत्रिका
- भ्रमरगीत सार
- आनंद कादंबिनी

6. काव्य रचना

- अभिमन्यु वध
- 11 वर्ष का समय

रामचंद्र शुक्ल का मृत्यु

अचार्य रामचंद्र शुक्ला बहुत ही सक्षम कवि निबंधकार आलोचक आदि थे उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि कम से कम शब्दों में बहुत बड़ी से बड़ी बात अपनी रचनाओं में बता देते थे.

आचार्य रामचंद्र शुक्ल की रचनाओं में व्यवहारिक भाषा का भी प्रयोग किया गया है इसके अलावा उनकी रचनाओं में उर्दू फारसी और अंग्रेजी शब्द का भी प्रयोग मिलता है. इस आलोचना के सम्राट हिंदी के युग प्रवर्तक कहे जाने वाले रामचंद्र शुक्ल का मृत्यु सन 1941 में हुआ था .

आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी अपने अंतिम दिनों तक लेखन क्षेत्र में ही बने रहे थे उन्होंने अंतिम दिनों में भी अपने लेखनी नहीं छोड़ी थी भारतीय हिंदी साहित्य में अचार्य रामचंद्र शुक्ल का एक विशेष स्थान है और हमेशा रहेगा .

रामचंद्र शुक्ल की रचनाओं में कई तरह की शैली होती है जैसे कि वर्णनात्मक शैली, विवेकआत्मक शैली, व्याख्यात्मक शैली, आलोचनात्मक शैली, भावनात्मक शैली तथा हादसे व्यंगात्मक शैली . उन्होंने अपनी रचनाओं में यह सारी शैलियों का प्रयोग किया था.

उन्होंने अपनी रचनाओं में संस्कृत के तत्सम भाषा का प्रयोग किया है उन्होंने अपनी रचनाओं में सरल भाषा का प्रयोग किया है और शुद्ध भाषा का भी प्रयोग किया

(उत्साह)

1. 'उत्साह' किस प्रकार का निबंध है?
उत्तर: उत्साह 'चिंतामणि' से लिया गया एक मनोविकारात्मक निबंध है।

2. 'उत्साह' किसे कहते हैं?
उत्तर: साहसपूर्ण आनंद की उमंग को उत्साह कहते हैं। अर्थात कष्ट या हानि सहने की दृढ़ता के साथ-साथ कर्म में प्रवृत्ति होने पर जो आनंद का योग होता है वही उत्साह कहलाता है।

3. साहसपूर्ण आनंद की उमंग का नाम क्या है?
उत्तर: साहसपूर्ण आनंद की उमंग का नाम 'उत्साह' है।

4. 'युद्ध-वीर' और 'दान-वीर' से आप क्या समझते हैं?
उत्तर: युद्धवीर और दानवीर दोनों में उत्साह पाई जाती है। पर दोनों का स्वरूप अलग-अलग है। जिस उत्साह में आनंदपूर्ण तत्परता के साथ लोग कष्ट-पीड़ा या मृत्यु तक की परवाह न करते हुए पूरी वीरता और पराक्रम के साथ कर्म करते हैं तो वह युद्धवीर कहलाएगा। दूसरी ओर जिस उत्साह में अर्थ-त्याग का साहस अर्थात उसके कारण होने वाले कष्ट या कठिनाता को सहने की क्षमता अंतर्निहित रहती हो वह दानवीर कहलाएगा।

5. क्या उत्साह की गिनती अच्छे गुणों या बुरे गुणों में होती है?

उत्तर: हाँ : उत्साह की गिनती अच्छे और बुरे दोनों गुणों में होती है।

6. श्रीकृष्ण का कर्म-मार्ग कैसा था?
उत्तर: श्रीकृष्णा का कर्म-मार्ग फलाफल पर केंद्रित न होकर कर्मों को आनंदपूर्वक तरीके से करते जाना था। अर्थात वे फल या परिणाम की चाह नहीं रखते थे।

7. सच्चे उत्साही बनने के लिए किन-किन गुणों की आवश्यकता है?
उत्तर: सच्चे उत्साही बनने के लिए कर्म के प्रति लगाव, फल प्राप्ति से दूर, दान-वीर, बुद्धि-वीर, कष्ट एवं हानि को आनंद के साथ स्वीकारना आदि गुणों की आवश्यकता है।

Chapter -3

रामधारी सिंह दिनकर का जीवन परिचय

दिनकर जी का जन्म सन् 1908 में बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया घाट नामक ग्राम में एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। कविता लिखने का शौक इन्हें विद्यार्थी जीवन से ही था। हाईस्कूल पास करने के बाद ही इन्होंने 'प्राण भंग' नामक काव्य पुस्तक लिखी जो सन् 1929 में प्रकाशित हुई। सन् 1932 में बी. ए. परीक्षा उत्तीर्ण करके इन्होंने एक उच्च माध्यमिक विद्यालय में प्रधान अध्यापक के पद पर कार्य किया।

इसके बाद अवर निबन्धक के पद पर सरकारी नौकरी में चले गये। बाद में प्रचार विभाग के निदेशक के पद पर स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद तक कार्य करते रहे। इसके बाद इन्होंने बिहार विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद पर कुछ समय तक कार्य किया। तत्पश्चात् भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति भी रहे। अन्त में भारत सरकार के गृह विभाग में हिन्दी सलाहकार के रूप में एक लम्बे अरसे तक हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए कार्यरत रहे।

इनको ज्ञानपीठ और साहित्य अकादमी के पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। सन् 1959 में भारत सरकार ने इन्हें 'पद्म भूषण' की उपाधि से अलंकृत किया और सन् 1962 में भागलपुर विश्वविद्यालय ने आपको डी. लिट् की मानद उपाधि से सम्मानित किया। इस प्रकार हिन्दी की अनवरत सेवा करते हुए सन् 1974 में हिन्दी साहित्याकाश का यह 'दिनकर' सदा-सदा के लिए अस्त हो गया।

renaissance

रामधारी सिंह दिनकर जी का परिवार

पिता का नाम	बाबू रवि सिंह
माता का नाम	मनरूप देवी
भाई के नाम	केदारनाथ सिंह, रामसेवक सिंह
पत्नी का नाम	श्यामावती देवी

संतान	एक पुत्र (नाम ज्ञात नही)

रामधारी सिंह दिनकर का साहित्यिक परिचय

दिनकर जी आधुनिक युग के एक ऐसे उदीयमान साहित्यकार हैं जिन्होंने बाल्यावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक हिन्दी-साहित्य की अनवरत सेवा की है। यह कवि और कुशल गद्यकार के रूप में साहित्य जगत में जाने जाते हैं। इन्होंने गद्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति, दर्शन और कला का गम्भीर विवेचन प्रस्तुत किया है। साथ ही हिन्दी के प्रचार के लिए स्तुत्य कार्य किया है। इस प्रकार 'दिनकर' जी ने हिन्दी की महान् सेवा की है। अत : आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रणेताओं में 'दिनकर' जी का स्थान दिनकर के सदृश सर्वोच्च है।

रामधारी सिंह दिनकर की कृतियाँ

दिनकर जी बहुमुखी प्रतिभा के कलाकार थे। आपकी प्रसिद्धि का मूल आधार कविता है। लेकिन गद्य लेखन में भी आप पीछे नहीं रहे और अनेक अनमोल गद्य ग्रन्थ लिखकर हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धिव की है आपकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं

गद्य ग्रन्थ --- अर्द्धनारीश्वर, मिट्टी की ओर, रेती के फूल बट पीपल, उजली आग, भारतीय संस्कृति के चार अध्याय, हमारी सांस्कृतिक एकता।

काव्य ग्रन्थ --- प्रण भंग, रेणुका, रसवन्ती, सामधेनी, बापू, हुँकार, रश्मिरथी, परशुराम की प्रतिज्ञा, आदी।

महाकाव्य --- कुरुक्षेत्र, उर्वशी।

बाल निबन्ध-मिर्च का मजा, सूरज का ब्याह, चित्तौड़ का सांका।

रामधारी सिंह दिनकर की भाषा

दिनकर जी की भाषा शुद्ध और परिमार्जित खड़ी बोली है। इसमें उर्दू, अंग्रेजी तथा देशज शब्दो का उन्मुक्त प्रयोग मिलता है। इनकी भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दों का भी बाहुल्य है। इनकी भाषा सहज प्रवाहमयी है, इसमें कृत्रिमता नाम मात्र को नहीं है। मुहावरों और कहावतों के प्रयोग से भाषा सजीव और ओजमयी हो गयी है। विषय के अनुरूप इनकी भाषा सर्वत्र परिवर्तित होती रहती है।

रामधारी सिंह दिनकर की शैली

दिनकर की शैली को तीन रूपों में विभाजित किया जा सकता है – विवेचनात्मक शैली, उध्दरण शैली और सूक्ति शैली। उनकी गद्य की प्रमुख शैली विवेचनात्मक ही है। यह शैली प्रभावोत्पादक तथा सारयुक्त है। उद्धरण शैली में लेखक अपनी बात की पुष्टि के लिए अन्य विद्वानों के कथनों को उद्धृत करता चलता है सूक्ति शैली में इस प्रकार के उदाहरण दिये जाते हैं जिसका सार्वजनिक महत्त्व होता है। दिनकर जी की शैली में इस प्रकार के उद्धरण और सूक्ति वचनों की भरमार है। ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से पाठ उनकी इस शैली का एक ज्वलन्त उदाहरण है। इस प्रकार दिनकर जी एक चतुर भाषा-शिल्पी और कुशल शैलीकार हैं।

Chapter - 4

आदि शंकराचार्य का जीवन और दर्शन

आदि शंकराचार्य का जन्म केरल के कालरी गांव में सन् 684 ई. में हुआ था, उनके पिता का नाम शिवगुरू तथा माता का नाम सती था। शंकराचार्य ने बाल्यकाल से ही सन्यास ले लिया था और वेदान्त की शिक्षा प्राप्त करने के लिए वे महात्मा गोविन्दाचार्य के पास चले गए थे। शिक्षा प्राप्त करने के बाद गुरू के आदेश पर उन्होंने काशी की यात्रा की और वहां के विद्वानों को अपने ज्ञान से प्रभावित किया।

बालक शंकर बचपन से ही संसारिक जीवन से विरक्त थे और सन्यास ग्रहण करना चाहते थे। पर माता उन्हें इसकी आज्ञा नहीं देती थी। किंवदन्ती के अनुसार एक बार शंकर जब नदी में स्नान कर रहे थे तो एक मगर ने उनका पैर पकड़ लिया। माता विलाप करने लगी। शंकर के यह कहने पर कि अगर वह उन्हें सन्यास लेने की अनुमति देंगी तो मगर से उनकी प्राण-रक्षा हो जायेगी। विवश माता ने शंकर को सन्यास की अनुमति दे दी। मगर से शंकर ने अपने को मुक्त कर लिया। बालक शंकर ने प्रकाण्ड वेदान्ती गोविन्दपाद या गोविन्दाचार्य का शिष्यत्व ग्रहण कर उनसे सन्यास की दीक्षा ली। शंकर की मेधा, जिज्ञासा एवं सेवा से संतुष्ट होकर गोविन्दपाद ने अपने प्रिय शिष्य को उपनिषदों का अर्थ एवं भाव तथा ब्रह्म का गूढ़ रहस्य समझाया।
आत्मा, परमात्मा एवं सृष्टि के सत्य को समझने के उपरांत शंकराचार्य वेदान्त के प्रचार-प्रसार के लिए निकल पड़े। बनारस नगरी में एक दिन प्रातः वेला में गंगा के किनारे चार श्वानों के साथ एक चाण्डाल मिला। स्पर्श होने के भय से शंकर ने चाण्डाल को मार्ग से हटने के लिए कहा। चाण्डाल ने प्रश्न किया ''आप किसे हटने के लिए कह रहे हैं- मेरे शरीर को या मेरी आत्मा को? शरीर नश्वर एवं नाशवान है, आत्मा तो उसी ब्रह्म को अंश है जो सर्वशक्तिमान है।'' शंकर को भेद रहित ब्रह्म में भेद देखने का अहसास हुआ। शंकर ने चाण्डाल को अपना गुरू स्वीकार किया।

शंकराचार्य में विलक्षण तर्कशक्ति थी। वे वाद-विवाद में अपने समस्त विरोधियों को परास्त करते गए। बौद्धों एवं अन्य मतावलम्बियों को शंकर के तर्कों के सामने टिकना कठिन हो रहा था। वे परास्त होकर उनके शिष्य बन गए। सोलह वर्ष की उम्र तक काशी में रहने के उपरांत वे आध्यात्मिक दिग्विजय के लिए निकल पड़े- अब वे शास्त्रार्थ और लेखन कार्य के द्वारा अद्वैत दर्शन की श्रेष्ठता स्थापित करने में लग गए।

काशी से शंकराचार्य अपने समर्थकों के साथ बद्रीनाथ गए और वहां पुनः मूर्ति स्थापित कर बद्रीनाथ की मान्यता को प्रतिष्ठित किया। यहीं पास के क्षेत्र में शंकराचार्य ने जोशी मठ की स्थापना की, और बद्रीनाथ के पास की व्यास गुफा में रहकर उन्होंने उपनिषदों और ब्रह्मसूत्रों पर भाष्य लिखे। शंकराचार्य के समय में वेदों और उपनिषदों के ज्ञान को कम महत्व दिया जाने लगा था। परन्तु उन्होंने अपनी विद्वता और गंभीर प्रयासों से पुनः हिन्दू धर्म की मान्यताओं को स्थापित्य किया। वेदों के ज्ञान के प्रचार और हिन्दू जनता में पुनः चेतना जागृत करने के उद्देश्य से शंकराचार्य ने उत्तराखण्ड, अयोध्या, काशी, प्रयाग, दिल्ली, उज्जैन, कांची, कामरूप, गया, कोणार्क, जगन्नाथ, द्वारिका, मथुरा, रामेश्वरम आदि चारों दिशाओं के तीर्थ स्थानों की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान उन्होंने लगातार विद्वानों से संपर्क स्थापित कर, उनसे वाद-विवाद कर अपनी विद्वता की छाप समस्त लोगों पर छोड़ी थी।

शंकराचार्य ने देश की जनता को एक सूत्र में पिरोने के लिए चार प्रसिद्ध मठों की स्थापना की थी। ये मठ हैं जगन्नाथ पुरी, जोशीमठ, द्वारकापुरी और श्रंगेरीमठ, आज भी आम हिन्दू इन चार धामों की यात्रा कर मोक्ष प्राप्त करने की कामना करता है। शंकराचार्य ने देश के संयासियों को एक सूत्र में पिरोने के लिए '' दसनामी संप्रदाय'' की स्थापना की थी। शंकराचार्य द्वारा रचित ग्रंथों की संख्या 240 के आस पास है। आज आदि शंकराचार्य को भगवान और जगतगुरू के रूप में माना जाता है। बत्तीस वर्ष की अल्पायु में ही, सन् 820 ई0, में उनका देहावसान हो गया।

शंकराचार्य ने अपने छोटे जीवन काल में न केवल पूरे देश की लगातार यात्रा कर सांस्कृतिक-धार्मिक एकता को बढ़ाया वरन् वे लगातार लिखते भी रहे। वे एक महान लेखक एवं विचारक थे- उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथों पर भाष्य लिखे। सनातन धर्म की परम्परा में गीता, उपनिषद् और ब्रह्मसूत्र को प्रस्थानत्रयी के नाम से पुकारा जाता है। इन तीनों ही ग्रन्थों पर सर्वप्रथम भाष्य लिखने वाले शंकराचार्य ही थे। इन्होंने अनेक महत्वपूर्ण उपनिषदों, जैसे- ऐतरेय, ईश केन, छान्दोग्य मुण्डक, माण्डुक्य, तैत्तिरीय, वृहदारण्यक, श्वेताश्वतर आदि पर भाष्य लिखे। ऐसा माना जाता है कि शंकराचार्य ने लगभग दो सौ ग्रन्थों की रचना की थी- जिनमें से अनेक ग्रन्थ अब उपलब्ध नहीं है।

शंकराचार्य की प्रमुख उपलब्ध रचनाएँ हैं: उपनिषद्भाष्य, गीताभाष्य, ब्रह्मसूत्रभाष्य, विष्णुसहस्त्रनामभाष्य, सनत्सुजातीयभाष्य, सौन्दर्यलहरी, उपदेशसाहस्त्री आदि। इनकी रचना शैली इतनी रोचक है, गंभीर विषयों को सरल शब्द में अभिव्यक्त करने में इनकी कला इतनी मनोरम है कि इनके 'प्रसन्नगम्भीरभाष्य' साहित्यिक दृष्टि से भी अनुपम है। वेदान्त की जैसी सरल एवं रोचक व्याख्या शंकर के ग्रन्थों में मिलती है वैसी अन्यत्र कहीं नहीं। गीता पर शंकराचार्य का भाष्य अत्यधिक प्रतिष्ठित है।

आदि शंकराचार्य के चार मठ

आद्यगुरू शंकराचार्य ने भारत की चार दिशाओं में चार मठों की स्थापना की। हर भारतीय की इच्छा इन धामों के दर्शन की होती है- ये मठ जन सामान्य की शिक्षा के केन्द्र रहे हैं। शंकराचार्य के द्वारा रचित 'मठाम्नाय' ग्रंथ में इन मठों का विस्तृत वर्णन है। ये मठ हैं-

1. **ज्योतिर्मठ-** यह मठ उत्तर भारत में बदरीनाथ में अवस्थित है। इस मठ के अन्तर्गत वर्तमान दिल्ली, पंजाब, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा आदि प्रांत आते हैं।
2. **श्रृंगेरी मठ-** यह मठ दक्षिण में स्थित है। आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल आदि प्रांत इसके अन्तर्गत आते हैं।
3. **गोवर्धन मठ-** पूरब में वर्तमान उड़ीसा प्रांत के जगन्नाथ पुरी में यह मठ स्थापित किया गया। उड़ीसा, बंगाल, झारखंड इसके प्रभाव-क्षेत्र में आते हैं।
4. **शारदा मठ-** यह मठ पश्चिम भारत में द्वारिकापुरी में स्थित है। इसके अन्तर्गत सिन्धु, गुजरात, महाराष्ट्र आदि क्षेत्र आते हैं।

शंकराचार्य स्वंय किसी पीठ के अधिपति नहीं बने। उन्होंने अपने चार प्रिय शिष्यों- तोटक, सुरेश्वराचार्य, पद्मपाद, एवं हस्तमालक को क्रमश: ज्योतिर्मठ, श्रश्ंगेरी मठ, गोवर्धन मठ और शारदा मठ में अधिपति के रूप में आसीन कर दिया। इन पीठों में परम्परा से एक-एक पीठाधीश होता है जिन्हें हम शंकराचार्य के नाम से पुकारते हैं।

शंकराचार्य ने इन पीठाधीशों को निर्देश दिया था कि वे एक स्थल पर वास न कर निर्धारित क्षेत्र में लगातार भ्रमण करते रहें तथा धर्म, संस्कृति और ज्ञान के संरक्षण और विकास को सुनिश्चित करें। आदिगुरू शंकराचार्य द्वारा स्थापित ये मठ आज भी अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन कर रहे हैं।

आदि शंकराचार्य की रचनाएं एवं भाष्य

1. विवेक चूड़ामणि-अद्वैत वेदान्त पर लिखी गई इनकी श्रेष्ठ कृति है।
2. ब्रह्म सूत्र भाष्य
3. उपनिषद भाष्य- आचार्य शंकर के उपनिषद भाष्य अत्यन्त सटीक व उच्च कोटि के हैं। जिनमें वृहद्आरण्यक, माण्डुक्य, तेत्रैय, केन, कण्ठ आदि प्रसिद्ध हैं।
4. भगवद्गीता पर भाष्य
5. भजगोविंदम् रचना
6. शिवानंदलहरी- भगवान शिव को समर्पित
7. सौन्दर्य लहरी- आदि शक्ति की प्रार्थना
8. विष्णु सहस्रनाम पर भाष्य 9माण्डुक्य उपनिषद पर परमगुरू गोणपादाचार्य की 'कारिका' पर भाष्य

आदि शंकराचार्य का अद्वैत वेदान्त दर्शन

शंकराचार्य का मत 'अद्वैतवाद' नाम से विख्यात है। यह उपनिषदों के बहुत निकट है। उपनिषद ब्रह्मसूत्र तथा गीता पर लिखे गये भाष्यों के माध्यम से शंकर ने अपने मत को प्रतिपादित किया। विभिन्न दार्शनिक सिद्धान्तों को उन्होंने एक सूत्र में पिरोकर एक क्रमबद्ध दर्शन का रूप प्रदान किया।

शंकराचार्य द्वारा प्रतिपादित वेदान्त दर्शन के निम्नलिखित प्रमुख सिद्धान्त है:-

1. ब्रह्म ही सत्य है- शंकराचार्य के अनुसार ब्रह्म ही सत्य है अन्य सारे पदार्थ असत्य या मिथ्या हैं। यह जगत अनित्य एवं असत्य है क्योंकि वह निरन्तर परिवर्तनशील है। ब्रह्म का स्वरूप 'सत्, चित् एवं आनन्द' है। ब्रह्म निर्गुण है- सभी आकारों से रहित। अविद्या के कारण उसे सगुण माना जाता है।

2. ब्रह्माण्ड ब्रह्म द्वारा निर्मित है- शंकराचार्य के अनुसार ब्रह्म ही मूल तत्व है और इसके ही द्वारा ब्रह्माण्ड का निर्माण होता है। और उसी के द्वारा इसमें नित्य दृश्य एवं अदृश्य परिवर्तन होते रहते हैं। ब्रह्म की वह शक्ति जिसके द्वारा वह ब्रह्माण्ड का निर्माण करता है, उसे शंकराचार्य ने 'माया' कहा है। समस्त जगत ब्रह्म का 'विवर्त' है। तत्व में यदि अतत्व का भान हो तो उसे विवर्त कहा जाता है। जगत का सम्पूर्ण आकार जल के ऊपर बुदबुदे के समान मिथ्या है। ब्रह्म जगत की रचना, क्रीड़ा या लीला के लिए करता है और स्वंय जगत के रूप में विवर्तित होता है।

3. ब्रह्म और आत्मा एक है- शंकराचार्य के अनुसार ब्रह्म और आत्मा भिन्न नहीं है। आत्मा से युक्त जीव शुद्ध रूप में चैतन्य एवं ब्रह्मस्वरूप है। मूलत: ब्रह्म और आत्मा में भेद नहीं है इसीलिए इसे ''अद्वैत'' कहा गया है। ब्रह्म की माया शक्ति के कारण आत्मा ब्रह्म से अलग दिखती है। माया या अविद्या का नाश होते ही दोनों में कोई अन्तर प्रतीत नहीं होता है।

4. मानव अनन्त शक्ति एवं ज्ञान का स्रोत है- शंकराचार्य ने आत्मा को ब्रह्म का स्वरूप माना है। आत्मा भी ब्रह्म की ही तरह अनन्त शक्ति एवं ज्ञान का स्रोत है। वह सर्वज्ञ, सर्वव्यापी एवं सर्वशक्तिशाली है। मानव माया जड़ित अज्ञान के कारण अपनी अनन्त शक्तियों को जान नहीं पाता है। अत: जीवन-मरण के बन्धन में पड़ा रहता है। जो मानव अपनी आत्मा को पहचान लेता है वह 'ब्रह्मस्वरूप' हो जाता है।

5. मानव जीवन का लक्ष्य मुक्ति मानव जीवन का लक्ष्य 'मुक्ति' है- सांसारिक बन्धनों की समाप्ति से ही मुक्ति संभव है। मुक्ति का मार्ग ज्ञान है। शंकराचार्य ने मुक्ति की व्याख्या कई रूपों में की है। संसार की क्षण भगुरता से परिचित हो जब मानव विरक्त हो जाता है और उसे सुख-दुख प्रभावित नहीं करता है तो उसे शंकर ने 'जीवन मुक्त' कहा। जीवन-मुक्त व्यक्ति सभी प्राणियों में अपना ही स्वरूप देखता है। वह भेदभाव से ऊपर उठकर सत्कर्म में लगा रहता है वह आत्मा और ब्रह्म में भेद नहीं करता है। शंकराचार्य ने ऐसी मुक्ति को 'विदेह मुक्ति' कहा। 'जीवन मुक्ति' आनन्द देती है तो विदेह मुक्ति 'परमानन्द'।

6. मुक्ति का साधन ज्ञान है 'ज्ञान' की प्राप्ति को ही शंकराचार्य ने 'मुक्ति' कहा है- ज्ञान के अभाव में मानव 'अविद्या' या 'माया' के प्रभाव में रहता है और वह भौतिक जगत को ही सत्य मान बैठता है। जब जीव को सही ज्ञान प्राप्त होता है तो वह आत्मा एवं ब्रह्म के सही स्वरूप को जान पाता है और वह जीवन मुक्ति से विदेह मुक्ति तक पहुँच जाता है। वह कह उठता है 'अहं ब्रहस्मि'- मैं ब्रह्म हूँ।

अद्वैत वेदान्त की मुख्य विशेषताएं

अद्वैत वेदान्त की मुख्य विशेषताएं निम्न है -

1. निखिल सृष्टि में एकमात्र ब्रह्म ही सत्य है।
2. यह दृश्यमान जगत माया का कार्य होने के कारण मिथ्या है।
3. जीव (आत्मा) तथा ब्रह्म में कोई भेद नहीं है।

Unit -3

Chapter -1

शब्द भंडार किसे कहते हैं

हिंदी साहित्य या हिंदी भाषा में शब्दों का ऐसा समूह जिसमें पर्यायवाची, विलोम, एकार्थी, अनेकार्थी, समरूपी भिन्नार्थक और अनेक शब्दों के लिए एक शब्द जैसे शब्दों को एक जगह

इकट्ठा करके रखना ही शब्द भंडार है।

शब्द भंडार के प्रकार

1. **पर्यायवाची शब्द**
2. **विलोम शब्द**
3. **एकार्थी शब्द**
4. **अनेकार्थी शब्द**
5. **समरूपी भिन्नार्थक शब्द**
6. **अनेक शब्दों के लिए एक शब्द आदि।**

1. पर्यायवाची शब्द किसे कहते हैं

पर्यायवाची शब्द की परिभाषा - वे शब्द जो लगभग एक समान अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें

पर्यायवाची या समानार्थी शब्द कहते हैं। सरल भाषा में कहें तो समान अर्थ वाले शब्दों को ही पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

मैंने यहां कुछ शब्द दिए हैं जो की आपके लिए महत्वपूर्ण हो सकते हैं -

पर्यायवाची शब्द

1. अश्व - घोड़ा, तुरंग, घोटक, हय
2. अहंकार - घमंड, अहं, गर्व, अभिमान
3. असुर - दानव, दनुज, राक्षस
4. अध्यापक - शिक्षक, आचार्य, गुरु
5. अतिथि - मेहमान, पाहून, अभ्यागत, आगंतुक
6. अमृत - सुधा, पीयूष, अमिय, अमी

7. तालाब - सरोवर, तड़ाग, सर, ताल
8. तट - कूल, किनारा, कगार
9. दशा - अवस्था, स्थिति, हालत, परिस्थिति
10. इन्द्र - सुरपति, देवराज, देवेंद्र, पुरंदर, शचीपति
11. दास - सेवक, भृत्य, नौकर, अनुचर
12. दूध - दुग्ध, क्षीर, पय, गोरस
13. उपवन - बाग़, बगीचा, उद्यान, वाटिका, फुलवारी
14. ऋषि - मुनि, साधू, संत, महात्मा
15. कमल - पंकज, अरविन्द, पदम्, नीरज, जलज
16. पत्नी - भार्या, गृहणी, वधू, दारा
17. किरण - रश्मि, अंशु, कर, मरीचि
18. पर्वत - गिरी, पहाड़, अचल, नग, शैल

19. पेड़ - वृक्ष, विटप, पादप, महीतरु

20. चाँदनी - चंद्रिका, कौमुदी, ज्योत्स्ना

21. चतुर - कुशल, दक्ष, निपुण, प्रवीण, पटु

22. अरण्य - जंगल, वन, कानन, विपिन

23. आँख - नयन, नेत्र, लोचन, चक्षु, दृग

24. आकाश - आसमान, नभ, गगन, व्योम, अंबर

25. दुःख - पीड़ा, व्यथा, क्लेश, संताप

26. देव - देवता, सुर, अमर, विबुध

27. उद्देश्य - लक्ष्य, प्रयोजन, ध्येय, मकसद, इरादा

28. धनुष - धनु, चाप, कमान

29. उन्नती - विकास, उत्थान, तरक्की, प्रगति

30. परमात्मा - प्रभु, ईश्वर, भगवान, ईश

31. कामदेव - मनोज, मदन, काम, अनंग

32. कार्य - काम, कृत्य, कर्म, काज

33. पथिक - राही, पंथी, मुसाफिर, बटोही

34. कोकिल - कोयल, पिक, परभृत

35. फूल - कुसुम, सुमन, प्रसून, पुष्प

36. चंद्र - चन्द्रमा, शशि, हिमांशु, राकेश, शशांक

37. भौंरा - भ्रमर, अलि, भँवरा, षट्पद, भृंग

38. सूर्य - सूरज, दिनकर, आदित्य, रवि, भानु

विलोम शब्द की परिभाषा - वे शब्द जो एक दुसरे का विपरीत अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें विलोम

शब्द कहते हैं। विलोम शब्द को विपरीतार्थी शब्द भी कहते हैं।

विलोम शब्द हिन्दी

renaissance
renaissance

1. अंदर - बाहर
2. अंधकार - प्रकाश
3. आगमन - प्रस्थान
4. अंतरंग - बहिरंग
5. अंतर्मुखी - बहिर्मुखी
6. अतिवृष्टि - अनावृष्टि
7. अनुकूल - प्रतिकूल
8. इहलोक - परलोक
9. कटु - मधुर
10. निरक्षर - साक्षर
11. अनुज - अग्रज
12. कोमल - कठोर
13. उत्तीर्ण - अनुत्तीर्ण
14. उत्थान - पतन
15. उष्ण - शीत
16. उदार - अनुदार
17. उपकार - अपकार
18. उपस्थित - अनुपस्थित
19. एकता - अनेकता

20. तरुण - वृध्द
21. निंदा - प्रशंसा
22. अनुराग - विराग

renaissance
renaissance

23. कृत्रम - स्वाभाविक
24. मौखिक - लिखित
25. दुर्बल - सबल
26. सर्वज्ञ - अल्पज्ञ
27. आस्तिक - नास्तिक
28. दीर्घ - लघु
29. आसक्ति - विसक्ति
30. दुर्लभ - सुलभ
31. नश्वर - शाश्वत
32. कुकर्म - सुकर्म
33. अनिवार्य - ऐच्छिक
34. कृतज्ञ - कृतघ्न
35. परमार्थ - स्वार्थ
36. अपराधी - निरपराधी
37. अग्र - पश्च
38. मित्र - शत्रु
39. अभिज्ञ - अनभिज्ञ
40. विकारी - अविकारी
41. संयोग - वियोग
42. सफलता - विफलता
43. चल - अचल
44. अनाथ - सनाथ
45. कुटिल - सरल
46. पराधीन - स्वाधीन

renaissance
renaissance

47. अपमान - सम्मान

B.Com. 1 st Year Subject- Hindi

48. कीर्ति - अपकीर्ति

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

परिभाषा - वे शब्द जो अनेक शब्दों के स्थान पर अकेले ही प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें अनेक शब्दों के लिए एक शब्द कहते हैं।

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द उदाहरण -

1. जिस बात को कहा न जा सके - अकथनीय
2. जिसे टाला नहीं जा सकता - अनिवार्य
3. जो किसी के पीछे चलता हो - अनुयायी
4. जहां जाया न जा सके - अगम्य
5. अनेक राष्ट्रों से संबंधित - अंतर्राष्ट्रीय
6. जिसे जीता न जा सके - अजेय
7. जो क्षमा न किया जा सके - अक्षम्य
8. जो थोड़ा जानता हो - अल्पज्ञ
9. बिना वेतन के काम करने वाला - अवैतनिक
10. जिसे देखा न जा सके - अदृश्य, परोक्ष
11. जो कभी न मरे - अमर
12. अत्याचार करने वाला - अत्याचारी
13. जिसका विवाह हो गया हो - विवाहित
14. जो कभी बूढ़ा न हो - अजर

renaissance
renaissance

15. जिसे पाना सरल हो - सुलभ

16. जहां - जंगली पशु स्वतंत्रतापूर्वक रहते हों - अभ्यारण

17. आकाश को चुमने वाला - गगनचुम्बी

18. जिसकी आयु छोटी हो - अल्पायु

19. जिसे पढ़ा न हो - अपठित

20. जिसकी कल्पना न की जा सके - अकाल्पनिक

21. अंदर की बात जान्ने वाला - अन्तर्यामी

B.Com. 1 st Year Subject- Hindi

22. जो किसी के अधीन न हो - स्वतंत्र

23. जो धर्म का कार्य करे - धर्मात्मा

24. इन्द्रियों को जीतने वाला - जितेन्द्रिय

25. जहां अनाथ रह्ते हों - अनाथालय

26. अच्छे भाग्य वाला - सौभाग्यशाली

27. प्रत्येक मास होने वाला - मासिक

28. मांस न खाने वाला - शाकाहारी

29. दूर की सोचने वाला - दूरदर्शी

30. सौ वर्षों का समूह - शताब्दी

31. जो आँखों के सामने हो - प्रत्यक्ष

32. सुनने वाला - श्रोता

33. जो पढ़ा-लिखा न हो - अनपढ़

34. जिसकी आत्मा धर्म में लीन हो - धर्मात्मा

35. जिसके मुंह से आग निकलती हो - ज्वालामुखी

36. श्रम द्वारा जीवन यापन करने वाला - श्रमजीवी

renaissance
renaissance

37. जो शिव का उपासक हो - शैव

38. जो अपने पर अवलम्बित हो - स्वावलम्बी

39. उपकार को मानने वाला - कृतज्ञ

40. दूसरे देश का - विदेशी

41. जिसमें विकार न हो - निर्विकार

42. जो कार्य करने में कठिन हो - दुष्कर

43. जो पढ़ा लिखा हो - साक्षर

44. जो क्षण मात्र का हो - क्षणिक

45. जो गिना न जा सके - अगणित

46. जो अभी-अभी पैदा हुआ हो - नवजात

47. जिसके मन में ममता न हो - निर्मम

48. जो सच बोलता हो - सत्यवादी

49. जो अच्छे कुल में पैदा हो - कुलीन

50. पृथ्वी पर रहने वाला – थलचर

Chapter -2

संधि की परिभाषा व उसके प्रकार

हिंदी में संधि की अत्यधिक महत्ता है

संधि की परिभाषा

दो वर्णों के मेल को संधि कहते है।

संधि के उदाहरण :

1. देव + आलय = देवालय

2. जगत् + नाथ = जगन्नाथ

3. मनः + योग = मनोयोग

renaissance
renaissance

संधि तीन प्रकार की होती हैं:

1. स्वर संधि
2. व्यंजन संधि
3. विसर्ग संधि

स्वर संधि :

दो स्वरों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है उसे स्वर-संधि कहते है|

उदाहरण –

सूर्य + अस्त = सूर्यास्त

महा + आत्मा = महात्मा

हिम + आलय = हिमालय

स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं :

1. दीर्घ संधि
2. गुण संधि
3. वृद्धि संधि
4. यण संधि
5. अयादि संधि

1. दीर्घ-संधि :

ह्रस्व या दीर्घ 'अ' , 'इ' , 'उ' , के पश्चात क्रमशः ह्रस्व या दीर्घ 'अ' , 'इ' , 'उ' स्वर आएँ तो

दोनों को मिलाकर दीर्घ 'आ' , 'ई' , 'ऊ' हो जाते हैं|

उदाहरण –

अ + अ = आ धर्म + अर्थ = धर्मार्थ

अ+ आ = आ देव +आलय = देवालय

renaissance
renaissance

आ+ अ = आ परीक्षा + अथी = परीक्षार्थी

आ+ आ = आ महा + आत्मा = महात्मा

इ + इ = ई अति + इव = अतीव

इ+ई =ई गिरि + ईश = गिरीश

ई+इ = ई मही + इंद्र= महींद्र

ई+ई = ई रजनी + ईश = रजनीश

उ +उ = ऊ भानु + उदय = भानुदय

उ+ ऊ = ऊ लघु + ऊर्मि =लाघुर्मी

ऊ+उ = ऊ वधू + उत्सव = वधूत्स

ऊ + ऊ = ऊ सरयू + ऊर्मि = सरयूर्मि

2. गुण-संधि :

यदि 'अ' और 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' , उ या 'ऊ' और 'ऋ' स्वर आए तो दोनों के मिलने से

क्रमशः 'ए' , 'ओ' और 'अर्' हो जाते हैं|

उदाहरण –

अ + इ = ए नर + इंद्र = नरेंद्र

अ + ई = ए नर + ईश = नरेश

आ + इ = ए रमा + इंद्र = रमेंद्र

आ + ई = ए महा + ईश = महेश

अ+ उ = ओ वीर + उचित = वीरोचित

अ+ ऊ = ओ सूर्य + ऊर्जा = सूर्योर्जा

आ + उ = ओ महा + उदय – महोदय

आ+ ऊ =ओ दया + ऊर्मि = दयोर्मि

अ + ऋ = अर् देव + ऋषि = देवर्षि

आ + ऋ = अर् महा + ऋषि = महर्षि

3. वृद्धि-संधि :

'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' आ। तो दोनों के मेल से 'ऐ' हो जाता है तथा 'अ' और 'आ' ६

पश्चात 'ओ' या 'औ' आए तो दोनों के मेल से 'औ' हो जा है|

उदाहरण –

अ+ ए = ऐ एक + एक = एकैक

अ+ऐ = ऐ मत + ऐक्य = मतैक्य

आ + ए = ऐ सदा + एव = सदैव

आ + ऐ = ऐ महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य

अ+ओ=औ वन + ओषधि – वनौषधि

अ+ औ = औ परम + औदार्य = परमौदार्य

आ+ ओ= औ महा + ओजस्वी = महौजस्वी

आ+ औ= औ महा + औषध = महौषध

4. यण-संधि :

यदि 'इ' , 'ई' , 'उ' , 'ऊ' और 'ऋ' के बाद भिन्न स्वर आए तो 'इ' और 'ई' का 'य' , 'उ' और

'ऊ' का 'व' तथा 'ऋ' का 'र' हो जाता है|

उदाहरण –

इ+ अ = य अति + अधिक = अत्यधिक

इ+ ए = ये प्रति + एक = प्रत्येक

ई+ आ = या देवी + आगमन = देव्यागमन

ई+ ऐ = यै सखी + ऐश्वर्य = सख्यैश्वर्य

उ+ अ = व सु + अच्छ = स्वच्छ

renaissance
renaissance

उ+ आ=वा सु + आगत= स्वागत

ऊ+ आ = वा वधू + आगमन = वध्वागमन

ऋ+ अ = र पितृ + अनुमति = पित्रनुमति

ऋ + आ = रा मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा

5. अयादि-संधि : यदि 'ए' , 'ऐ' , 'ओ' , 'औ' स्वरों का मेल दूसरे स्वरों से हो तो 'ए' का 'अय' , 'ऐ' का 'आय' ,

'ओ' का 'अव' तथा 'औ' का 'आव' के रूप में परिवर्तन हो जाता है।

उदाहरण –

ए+ अ = अय ने + अन = नयन

ऐ+ अ = आय नै + अक = नायक

ऐ + इ = आयि नै + इका = नायिका

ओ+ अ = अव पो + अन = पवन

ओ+ इ = अवि पो + इत्र = पवित्र

ओ+ई = अवी गो + ईश = गवीश

औ+ अ = आव पौ + अन = पावन

औ+इ = आवि नौ + इक = नाविक

औ + उ = आवु भौ + उक = भावुक

व्यंजन-संधि : व्यंजन के बाद स्वर या व्यंजन आने से जो परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन-संधि कहते हैं|

उदाहरण –

वाक् + ईश = वागीश (क् + ई = गी)

सत् + जन = सज्जन (त् + ज = ज्ज)

उत् + हार = उद्धार (त् + ह = द्ध)

व्यंजन-संधि के नियम :

वर्ग के पहले वर्ण का तीसरे वर्ण में परिवर्तन

किसी वर्ग के पहले वर्ण (क् च ट त् प्) का मेल किसी स्वर अथवा किसी वर्ग के तीसरे वर्ण (ग ज ड द ब) या चौथे वर्ण (घ झ ढ ध भ) अथवा अंतःस्थ व्यंजन (य र ल व) के किसी वर्ण से होने पर वर्ग का पहला वर्ण अपने ही वर्ग के तीसरे वर्ण (ग् ज् ड् द् ब) में परिवर्तित हो जाता है|

उदाहरण –

क् का ग् होना : दिक् + गज = दिग्गज

च का ज होना : अच् + अंत = अजंत

ट का ड होना : षट् + आनन = षडानन

त् का द होना: भगवत्+ भजन = भगवद्भजन

प् का ब होना : अप् + ज = अब्ज

वर्ग के पहले वर्ण का पाँचवें वर्ण में परिवर्तन

यदि किसी वर्ग के पहले वर्ण (क् च् ट् त् प्) का मेल किसी अनुनासिक वर्ण (वस्तुतः केवल न म) से हो तो उसके स्थान पर उसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण (ङ् ञ् ण न म्) हो जाता है|

उदाहरण –

क् का ङ् होना : वाक् + मय = वाङ्मय

ट् का ण् होना : षट् + मुख = षण्मुख

त् का न होना : उत् + मत्त = उन्मत्त

‘छ’ संबंधी नियम

किसी भी ह्रस्व स्वर या ‘आ’ का मेल ‘छ’ से होने पर ‘छ’ से पहले ‘च’ जोड़ दिया जाता है|

उदाहरण –

स्व + छंद = स्वच्छंद

परि + छेद = परिच्छेद

अनु + छेद = अनुच्छेद

वि + छेद = विच्छेद

त् संबंधी नियम

(i) ‘त्’ के बाद यदि ‘च’ , ‘छ’ हो तो ‘त्’ का ‘च्’ हो जाता है|

उदाहरण –

उत् + चारण = उच्चारण

उत् + चरित = उच्चरित

जगत् + छाया = जगच्छाया

सत् + चरित्र = सच्चरित्र

(ii) ‘त्’ के बाद यदि ‘ज’ , ‘झ’ हो ता त् ‘ज’ में बदल जाता है।

उदाहरण –

विपत् + जाल = विपज्जाल

उत् +ज्वल = उज्ज्वल

उत् + झटिका = उज्झटिका

(iii) ‘त्’ के बाद यदि ‘ट’ , ‘ड’ हो तो ‘त्’ , क्रमशः ‘ट्’ ‘ड में बदल जाता है|

उदाहरण –

बृहत् + टीका = बृहट्टीका

उत् + डयन = उड्डयन

(iv) 'त्' के बाद यदि 'ल' हो तो 'त्' , 'ल' में बदल जाता है|

उदाहरण –

उत् + लास = उल्लास

उत् + लेख = उल्लेख

(v) 'त्' के बाद यदि 'श्' हो तो 'त्' का 'च' और 'श्' का "छ्' हो जाता है|

उदाहरण –

उत् + श्वास = उच्छ्वास

सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र

(vi) 'त्' के बाद यदि 'ह' हो तो 'त्' के स्थान पर 'द्' और 'ह' के स्थान पर 'ध' हो जाता है|

उदाहरण –

तत् + हित = तद्धित

उत् + हत – उद्धत

5. 'न' संबंधी नियम:

यदि 'ऋ' , 'र' , 'ष' के बाद 'न' व्यंजन आता है तो 'न' का 'ण' हो जाता है|

उदाहरण –

परि + नाम = परिणाम

प्र + मान = प्रमाण

राम + अयन = रामायण

भूष + अन = भूषण

6. 'म' संबंधी नियम :

(i) 'म्' का मेल 'क' से 'म' तक के किसी भी व्यंजन वर्ग से होने पर 'म्' उसी वर्ग के पंचमाक्षर (अनुस्वार) में बदल जाता है|

उदाहरण –

सम् + कलन = संकलन

सम् + गति = संगति

परम् + तु = परंतु

सम् + चय = संचय

सम् + पूर्ण = संपूर्ण

(ii) 'म्' का मेल यदि 'य' , 'र' , 'ल' , 'व' , 'श' , 'ष' , 'स' , 'ह' से हो तो 'म्' सदैव अनुस्वार ही

होता है|

उदाहरण –

सम् + योग = संयोग

सम् + रक्षक = संरक्षक

(iii) 'म्' के बाद 'म' आने पर कोई परिवर्तन नहीं होता है|

उदाहरण –

सम् + मान = सम्मान

सम् + मति = सम्मति

7. स संबंधी नियम :

'स' से पहले 'अ' , 'आ' से भिन्न स्वर हो तो 'स' का 'ष' हो जाता है|

उदाहरण –

वि + सम = विषम

वि + साद = विषाद

सु + समा = सुषमा

B.Com. 1 st Year Subject- Hindi

विसर्ग-संधि :

विसर्ग के पश्चात स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में जो विकार उत्पन्न होता है, उसे हम विसर्ग संधि कहते हैं|

उदाहरण –

निः + आहार = निराहार

दुः + आशा = दुराशा

तपः + भूमि = तपोभूमि

मनः + योग = मनोयोग

अंतः + गत = अंतर्गत

अंतः + ध्यान = अंतर्ध्यान

Chapter -3

धर्म का अर्थ

धर्म शब्द संस्कृत भाषा के 'धृ' से बना है जिसका अर्थ है किसी वस्तु को धारण करना अथवा उस वस्तु के अस्तित्व को बनाये रखना।

धर्म का सामान्य अर्थ कर्तव्य है। इसीलिए व्यक्ति के जीवन से संबंधित अनेक आचरणों की एक संहिता है जो उसके कर्तव्यों और व्यवहारों को नियंत्रित और निर्देशित करती है। उसका मार्ग-दर्शन करती है जिससे कि वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सके।
हिन्दू समाज मे धर्म की मान्यता इस प्रकार है "धारणात धर्ममाहुः" अर्थात् धारण करने के कारण ही किसी वस्तु को धर्म कहा जाता है।

बोसांके ने धर्म की व्याख्या करते हुए कहा है कि " जहाँ धर्मपरायणता, अनुशक्ति एवं भक्ति मिलती है, वही धर्म का प्राथमिक रूप प्राप्त हो जाता है।

धर्म से मोटे तौर पर धर्म से आश्य अलौकिक शक्ति पर विश्वास है। अलौकिक हम उसे कहते है जो लौकिक जगत से परे है। इंद्रियगम्य नही है। जो अगम और अगोचर है।

जिसे हम स्पर्श नही कर सकते, जिसे हम देख नही सकते, किन्तु उसका अस्तित्व है। वह सर्वशक्तिमान है और मानव जीवन व जगत को नियंत्रित करता है। यदि अलौकिक शक्ति साकार अर्थात् इंद्रिय गम्य है तो भी वह मानव की समझ और नियंत्रण से परे है।

धर्म की परिभाषा

विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई धर्म की परिभाषाएं निम्नलिखित हैं--

मजूमदार और मदन के अनुसार, "धर्म किसी भय की वस्तु अथवा शक्ति का मानवीय परिणाम है, जो पारलौकिक है इन्द्रियों से परे है। यह व्यवहार की अभिव्यक्ति तथा अनुकूलन का रूप है, जो लोगों को अलौकिक शक्ति की धारणा से प्रभावित करता है।"
डाॅ. राधाकृष्णन, " धर्म की अवधारणा के अन्तर्गत हिन्दू उन स्वरूपों और प्रतिक्रियाओं को लाते है जो मानव-जीवन का निर्माण करती है और उसको धारण करती है।"
गिलिन और गिलिन, " धर्म के समाजशास्त्रीय क्षेत्र के अन्तर्गत एक समूह मे अलौकिक से सम्बंधित उद्देश्यपूर्ण विश्वास तथा इन विश्वासों से सम्बंधित बाहरी व्यवहार, भौतिक वस्तुएँ और प्रतीक आते है।"
फ्रेजर, " धर्म से मेरा तात्पर्य मनुष्य से श्रेष्ठ उन शक्तियों की संतुष्टि अथवा आराधना करना है जिनके बारे मे व्यक्तियों का विश्वास हो कि वे प्रकृति और मानव-जीवन को नियंत्रित करती है तथा उनको निर्देश देती है।"

टेलर, " धर्म का अर्थ किसी आध्यात्मिक शक्ति मे विश्वास करना है।"
दुर्खीम, " धर्म पवित्र वस्तुओं से सम्बंधित विश्वासों और आचरणों की समग्रता है जो इन पर विश्वास करने वाले को एक नैतिक समुदाय के रूप मे संयुक्त करती है।"
होबेल, " धर्म अलौकिक शक्ति के ऊपर विश्वास मे आधारित है, जो आत्मवाद और मानव को सम्मिलित करता है।"
मैलिनोवस्की, " धर्म क्रिया का एक ढंग है और साथ ही विश्वासों की एक व्यवस्था भी, और धर्म एक समाजशास्त्रीय घटना के साथ-साथ एक व्यक्तिगत अनुभव भी है।"
होनिगशीम, " प्रत्येक मनोवृत्ति जो इस विश्वास पर आधारित या इस विश्वास से सम्बंधित है कि अलौकिक शक्तियों का अस्तित्व है और उनसे सम्बन्ध स्थापित करना सम्भव व महत्वपूर्ण है, धर्म कहलाती है।"
ऑगबर्न और निमकाक, " धर्म मानवोपरि शक्तियों के प्रति अभिवृत्तियाँ है।"
जाॅनसन, " एक धर्म प्राणियों, शक्तियों, स्थान अथवा अन्य वस्तुओं की अलौकिक व्यवस्था से सम्बंधित विश्वासों एवं व्यवहारों की अधिक या कम साम्यपूर्ण व्यवस्था है।"
पाॅल टिलिक " धर्म वह है, जो अन्ततः हमसे सम्बंधित है।"
उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर संक्षेप में कहा जा सकता है कि धर्म किसी-न - किसी प्रकार की अतिमानवीय (Super-human) या अलौकिक (Super-natural) या समाजोपरि (Supra-social) शक्ति

पर विश्वास है जिसका आधार भय, श्रद्धा भक्ति और पवित्रता की धारणा है और जिसकी अभिव्यक्ति प्रार्थना, पूजा या आराधना आदि के रूप में की जाती है।

धर्म की विशेषताएं या लक्षण

धर्म की विशेषताएं अथवा लक्षण निम्नलिखित है--

1. शक्ति मे विश्वास

धर्म की पहली विशेषता यह है कि यह शक्ति मे विश्वास पर आधारित है। धर्म शक्ति पर आधारित है वह मनुष्य निर्मित न होकर प्राकृतिक होता है।

2. दिव्य चरित्र

धर्म से जिस शक्ति मे विश्वास किया जाता है, उसकी प्रकृति अलौकिक होती है। चूंकि यह चरित्र दिव्य होता है, अतः मानव समाज से परे होती है।

3. पवित्रता का पत्र

सामाजिक जीवन के तत्वों को दो भागों मे विभाजित किया जा सकता है- पवित्र और अपवित्र। धर्म मे सिर्फ उन्ही तत्वों को महत्व प्रदान किया जाता है, जो पवित्रता की अवधारणा से सम्बंधित होते है।

4. सैद्धांतिक व्यवस्था

सैद्धांतिक व्यवस्था भी धर्म का अनिवार्य तत्व है इसका कारण यह है कि प्रत्येक धर्म की एक सैद्धांतिक व्यवस्था होती है। इस सैद्धान्तिक व्यवस्था की सहायता से धर्म को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान किया जाता है।

5. निश्चित प्रतिमान

प्रत्येक धर्म के कुछ निश्चित प्रतिमान होते है। ये प्रतिमान ईश्वरीय रक्षा का प्रतिनिधित्व करते है। यही कारण है कि व्यक्ति इन प्रतिमानों का आदर करता है तथा इन प्रतिमानों के आधार पर अपने व्यवहार का निर्धारण करता है।

6. मूल्यात्मक व्यवस्था

धर्म समाज मे मूल्यों की एक व्यवस्था का निर्धारण करता है। यहीकारण है कि धर्म को मूल्य और भावनाओं के आधार पर समझने का प्रयास किया जाता है। तर्क और विवेक को धर्म मे कोई स्थान नही है

7. धार्मिक चेतना

प्रत्येक धर्म अपने मे धार्मिक चेतना को विकसित करता है। धार्मिक चेतना के कारण ही व्यक्ति धर्म का आदार करता है। आज संसार मे जो अनेक धर्म पाए जाते है, उनका जन्म और विकास धार्मिक चेतना के कारण ही हुआ है।

8. कर्मकांड

धर्म से संबंध की अभिव्यक्ति पूजा पाठ, प्रार्थना या कर्मकांड के रूप मे होती है। प्रत्येक धर्म की मान्यताएं, विश्वास एवं पौराणिक गाथाओं के अनुसार कर्मकांड होता है। यहि वजह है कि विभिन्न धर्मों के

कर्मकांडों मे भिन्नता दिखाई पड़ती है।

9. धार्मिक मान्यताएं

प्रत्येक समाज के धर्म की अपनी अलग-अलग मूल्य एवं मान्यताएं है, यही मान्यताएं धर्म को एक विशिष्ट स्वरूप प्रदान करती है। यहि कारम है कि लोग समस्याओं एवं कठिनाइयों मे भी धर्म पर विश्वास करके साहस व धैर्य से कार्य करते है।

. निषेध

प्रत्येक धर्म में लोगों के व्यवहारों के नकारात्मक पक्ष को प्रभावित करने की दृष्टि से कुछ निषेध पाए जाते हैं। निषेध का तात्पर्य यही है कि उन्हें कुछ कार्यों की मनाही की जाती है, उन्हें बताया जाता है कि क्या-क्या नहीं करना चाहिए, जैसे झूठ नहीं बोलना चाहिए, दुराचार, व्याभिचार, बेईमानी आदि नहीं करनी चाहिए। कुछ निषेध सभी धर्मों में समान रूप से पाए जाते है। जबकि कुछ विशेष समाजों से ही संबंधित होते हैं। विवाह संबंधी निषेध प्रत्येक समाज में अलग-अलग पाए जाते हैं।

11. धार्मिक संस्तरण

सामन्यतः प्रत्येक धर्म से संबंधित संस्तरण की एक व्यवस्था पाई जाती है। जिन लोगों को धार्मिक क्रियाएँ अथवा कर्मकांड कराने का समाज द्वारा विशेष अधिकार प्राप्त होता है, उन्हें अन्य लोगों की तुलना में संस्कारात्मक दृष्टि से उच्च एवं पवित्र समझा जाता है। ऐसे लोगों में पंडे, पुजारी, महंत, संत, पादरी, मौलवी ओझा आदि आते हैं। संस्तरण की प्रणाली में दूसरा स्थान उन लोगों को प्राप्त होता है जो धर्म के अंतर्गत बताए गए मार्ग पर चलते हैं। जो लोग धार्मिक आदेशों का पालन नहीं करते, धर्म विरुद्ध कार्य करते है। अथवा अपवित्रता लाने वाली वस्तुओं केसंपर्क में आते हैं, उन्हें समाज में निम्नतम स्थान होता है।

धर्म और समाज

धर्म को मानव के सामाजिक तथा व्यक्तिगत जीवन के उस पक्ष के रूप में भी देखा जाता है, जिसमें मानव की उदात्त आकांक्षाएँ होती हैं। यह समाज की नियामक संरचना का आधार स्तम्भ है। यह समाज की सभी नैतिक मान्यताओं, मूल्यों और आचार की मर्यादा रखता है। इस प्रकार यह समाज में सार्वजनिक व्यवस्था का आधार है और सभी नर-नारियों के लिए अन्तःचेतना का उद्गम है। यह मानव में श्रेष्ठ गुणों का संचार कर उसे सभ्य बनाता है। लेकिन साथ ही मानव को आगे बढ़ने में यह उसके सामने बाधाएँ भी उपस्थित करता है। मनुष्य जाति पर इसका सबसे बुरा प्रभाव यह देखने में आया है कि यह मनुष्य को कट्टरपंथी, असहिष्णु, अज्ञानी, अंधविश्वासी और रूढ़िवादी बना देता है। (ओ. डेअ. टी. एफ. 1966)

समाज के सदस्यों को एक सूत्रबद्ध करने के लिए धर्म सबसे दृढ़ सूत्र है। परंतु इसके कारण ही धार्मिक युद्ध तथा सांप्रदायिक तनाव भी पैदा हुए हैं। फिर भी हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि समाज में सांप्रदायिक तनाव के कारणों में अधार्मिक मामले और ऐसे स्वार्थों के टकराव भी होते हैं जिनका धर्म से कोई संबंध नहीं होता। उदाहरण के लिए भारतीय समाज में होने वाले सांप्रदायिक तनावों को देखा जा सकता है।

अधिकांश लोग धर्म को विश्वव्यापी मानते हुए इसे समाज की एक महत्वपूर्ण संस्था मानते हैं। परंतु मार्क्सवादी विचारकों की दृष्टि में धर्म समाज का आवश्यक अंग नहीं है।

कार्ल मार्क्स के शब्दों में," धर्म दलित वर्ग की आह है, निर्दयी विश्व की भावना है और निष्प्राण स्थितियों की आत्मा है। यह जनता के लिए अफीम का काम करता हैं।"

उनका विश्वास था कि धर्म का विश्वास शोषित लोगों के दिमाग में गरीबी और शोषण का उत्पीड़न सहने के लिए अफीम के रूप में काम करता है।

अतः मानव समाज को तब तक इसकी आवश्यकता रहती है जब तक कि वह समाज के उच्च वर्ग द्वारा दलित और शोषित होता रहता है। समाजवादी समाज में इसकी कोई आवश्यकता नहीं होगी और यही सामाजिक विकास का अंतिम चरण होगा।

धर्म और आस्था

सभी धर्मों के मूल में आस्था की संकल्पना होती है। इस दृष्टि से धर्म, आस्था का बाह्य रूप है जो मानव समाज को उनके मूल लौकिक और लोकोत्तर जीवन से बाँधे रखता है। आस्था के कारण ही मानव अन्य जीवधारियों से भिन्न है। निश्चित रूप से यह व्यक्ति निष्ठ और निजी मामला है। हम एक दूसरे के विश्वासों का आदर करते हैं। इससे हमें व्यापक मानवीय आधार प्राप्त होता है।

इस प्रकार हम सबको एक सूत्र में बाँधे रखने के कारण आस्था, तर्क से अधिक महत्वपूर्ण है।

प्राचीन भारतीय चिंतनधारा के अनुसार, " आस्था ही आदमी को बनाती है जैसी आस्था वैसा व्यक्ति" (भगवद् गीता)।

बुद्ध धर्म के ग्रंथों में आस्था को मानव की पाँच कार्य शक्तियों में से एक माना गया है। (अन्य कार्य शक्तियाँ हैं ऊर्जा, मननशीलता, एकाग्रता और पूर्ण ज्ञान)।

आर. पाणिकर के अनुसार," आस्था मूलधार है और सभी मानव संबंध उसमें निहित हैं। यह एक प्रकार की प्रेमावस्था भी है। अपनी आस्था के माध्यम से आस्थावान अपने विचारों का आदान-प्रदान करता है और नास्तिक के साथ अपना तादात्म्य स्थापित करता है। इस प्रकार मानव अपने दैनिक जीवन में एक सूत्रबद्ध हो जाता है

अद्वैतवाद

अद्वैतवाद एक दार्शनिक स्थिति हैदुनिया की एकता को पहचानता है, अर्थात् इसमें शामिल सभी वस्तुओं की समानता, उनके बीच संबंध और पूरे आत्म-विकास जो वे बनाते हैं। अद्वैतवाद एक ही शुरुआत के प्रकाश में विश्व की घटनाओं की विविधता पर विचार करने के लिए एक विकल्प है, जो सब कुछ मौजूद है। अद्वैतवाद के विपरीत द्वैतवाद है, जो सिद्धांतों की बहुलता के आधार पर एक दूसरे से स्वतंत्र दो सिद्धांतों और बहुलवाद को मान्यता देता है।

अद्वैतवाद का अर्थ और प्रकार

एक विशिष्ट वैज्ञानिक और वैचारिक हैअद्वैतवाद। पहले का मुख्य लक्ष्य एक विशेष वर्ग की घटनाओं में समानता को खोजना है: गणितीय, रासायनिक, सामाजिक, भौतिक, और इसी तरह। दूसरे का कार्य सभी मौजूदा घटनाओं के लिए एक आधार ढूंढना है। इस तरह के दार्शनिक प्रश्न के समाधान की प्रकृति के रूप में सोच और अस्तित्व के अनुपात के रूप में, अद्वैतवाद को तीन किस्मों में विभाजित किया गया है:

1. विषयगत आदर्शवाद।
2. भौतिकवाद।
3. उद्देश्य आदर्शवाद।

व्यक्तिपरक आदर्शवादी दुनिया को सामग्री के रूप में व्याख्या करता हैव्यक्तिगत कारण और इसमें वह अपनी एकता को देखता है। भौतिकवादी अद्वैतवाद वस्तुगत दुनिया को पहचानता है, सभी घटनाओं को पदार्थ या उसके गुणों के अस्तित्व के रूप में मानता है। एक वस्तुनिष्ठ आदर्शवादी अपनी स्वयं की चेतना और उसके बाहर मौजूद विश्व को पहचानता है।

अद्वैतवाद की अवधारणा

अद्वैतवाद एक अवधारणा है जो आधार को मान्यता देती हैएक पदार्थ की दुनिया। यही है, दर्शन की यह दिशा द्वैतवाद और बहुलवाद के विपरीत, एक ही शुरुआत से आती है, जो दिशाएँ आध्यात्मिक और भौतिक के बीच के संबंध को प्रमाणित करने में असमर्थ हैं। अद्वैतवाद दुनिया की एकता को इस समस्या के समाधान के रूप में देखता है, जो कि सामान्य आधार है। इस आधार के रूप में जो मान्यता प्राप्त है, उसके आधार पर अद्वैतवाद भौतिकवादी और आदर्शवादी में विभाजित है।

अद्वैतवाद के रूप

अद्वैतवाद मूल प्रश्न को हल करने का एक तरीका हैदर्शन, जो संसार के मांगे गए मूलभूत सिद्धांत की समझ को ध्यान में रखते हुए निरंतर और असतत रूप में विभाजित है। निरंतर अद्वैतवाद रूप और सब्सट्रेट, असतत - संरचना और तत्वों के संदर्भ में दुनिया का वर्णन करता है। पहले हेगेल, हेराक्लिटस, अरस्तू जैसे दार्शनिकों द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया था। डेमोक्रिटस, लाइबनिज और अन्य को दूसरे का प्रतिनिधि माना जाता है।

एक मुनि के लिए, मौलिक खोजना नहीं हैमुख्य लक्ष्य। वांछित प्राथमिक सब्सट्रेट तक पहुंचने के बाद, उन्हें विपरीत दिशा में, भागों से पूरे में स्थानांतरित करने का अवसर मिलता है। समानता की परिभाषा आपको प्राथमिक तत्वों के बीच शुरू में एक कनेक्शन खोजने की अनुमति देती है, और फिर उनके अधिक जटिल कनेक्शनों के बीच। अपने प्राथमिक तत्वों से पूरे की ओर गति को दो तरीकों से अंजाम दिया जा सकता है: diachronic और synchronous

इसके अलावा, अद्वैतवाद न केवल एक दृष्टिकोण है, बल्किऔर अनुसंधान विधि। उदाहरण के लिए, गणितीय संख्याओं का सिद्धांत अपनी कई वस्तुओं को प्राकृतिक संख्याओं से प्राप्त करता है। ज्यामिति में, बिंदु को आधार के रूप में लिया जाता है। उन्होंने एक विश्वदृष्टिवाद विकसित करते हुए एक विज्ञान की सीमा के भीतर एक अद्वैत दृष्टिकोण लागू करने का प्रयास किया। इस प्रकार, सिद्धांतों ने प्रकट किया कि यांत्रिक आंदोलन (मैकेनिकवाद),

renaissance
renaissance

संख्या (पाइथागोरस), भौतिक प्रक्रियाएं (भौतिकवाद), और इसी तरह विश्व आधार माना जाता है। यदि इस प्रक्रिया में कठिनाइयाँ उत्पन्न हुईं, तो इससे बहुवाद द्वारा अद्वैतवाद को नकार दिया गया।

राजनीतिक अद्वैतवाद

राजनीतिक क्षेत्र में अद्वैतवाद व्यक्त किया जाता हैविपक्ष, नागरिक स्वतंत्रता और शक्तियों के पृथक्करण की प्रणाली के विनाश में एकदलीय प्रणाली की स्थापना। इसमें नेतृत्व और पार्टी और राज्य तंत्र का पूर्ण संयोजन शामिल हो सकता है। हिंसा, आतंक और सामूहिक दमन की खेती।

उदारीकरण

आर्थिक गतिविधियों के नियमन के लिए बनाए गए नियम- क़ानून ही जब संवृद्धि और विकास के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा बन जाते हैं। इन्हीं प्रतिबंधों को दूर कर **अर्थव्यवस्था** के विभिन्न क्षेत्रों को 'मुक्त' करने के लिए जिस नीति को अपनाया जाता है उसे **उदारीकरण liberalization** कहा जाता है।**आर्थिक उदारीकरण से आशय (arthik udarikaran se ashay)** व्यापार को अनावश्यक प्रतिबंधों से मुक्त करना है। नियम क़ानूनों को सरल बनाना ताकि स्वतंत्र **बाज़ार** व्यवस्था का निर्माण किया जा सके। चलिये **भारत और उदारीकरण** को हम और भी स्पष्ट भाषा में समझने का प्रयास करते हैं।

किसी भी देश का विकास तभी संभव होता है जब उस देश में होने वाला व्यापार फलता-फूलता है। चाहे फ़िर वह व्यापार देश के भीतर हो या देश के बाहर। किंतु सरकार को किसी भी उद्योग या व्यापार पर कुछ नियम क़ानून या आवश्यक प्रतिबंध भी लगाने होते हैं।

जैसे कि- (1) किसी भी उद्यमी को फर्म लगाने या बंद करने हेतु लाइसेंस या किसी विशिष्ट सरकारी अधिकारी की अनुमति प्राप्त करना, (2) अनेक उद्योगों में निजी उद्यमियों के प्रवेश पर प्रतिबंध होना, (3) कुछ औद्योगिक उत्पादों की क़ीमतों के निर्धारण तथा उनके वितरण पर सरकार का नियंत्रण होना।

आर्थिक गतिविधियों के नियमन के लिए बनाए गए नियम- क़ानून ही जब संवृद्धि और विकास के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा बन जाते हैं। इन्हीं प्रतिबंधों को दूर कर **अर्थव्यवस्था** के विभिन्न क्षेत्रों को 'मुक्त' करने के लिए जिस नीति को अपनाया जाता है उसे **उदारीकरण (liberalization)** कहा जाता है।

किसी भी देश का विकास तभी संभव होता है जब उस देश में होने वाला व्यापार फलता-फूलता है। चाहे फ़िर वह व्यापार देश के भीतर हो या देश के बाहर। किंतु सरकार को किसी भी उद्योग या व्यापार पर कुछ नियम क़ानून या आवश्यक प्रतिबंध भी लगाने होते हैं।

उदारीकरण की आवश्यकता

उद्योग-व्यापार, आयात-निर्यात, औद्योगिक क्षेत्र, वित्तीय क्षेत्र, कर सुधार, विदेशी विनिमय बाज़ार आदि क्षेत्रों में बनाए गए नियमों और क़ानूनों के चलते देश की आर्थिक गतिविधियों में अनेक बढ़ाएँ उत्पन्न हो रही थीं। आर्थिक विकास के रास्ते में आने वाली बाधाओं को हटाने के लिए 1991 में आरम्भ की गई सुधारवादी नीतियों के तहत सरकार को **आर्थिक उदारीकरण की नीति** अपनानी पड़ी।

जैसे कि- (1) किसी भी उद्यमी को फर्म लगाने या बंद करने हेतु लाइसेंस या किसी विशिष्ट सरकारी अधिकारी की अनुमति प्राप्त करना, (2) अनेक उद्योगों में निजी उद्यमियों के प्रवेश पर प्रतिबंध होना, (3) कुछ औद्योगिक उत्पादों की क़ीमतों के निर्धारण तथा उनके वितरण पर सरकार का नियंत्रण होना।

आर्थिक गतिविधियों के नियमन के लिए बनाए गए नियम- क़ानून ही जब संवृद्धि और विकास के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा बन जाते हैं। इन्हीं प्रतिबंधों को दूर कर **अर्थव्यवस्था** के विभिन्न क्षेत्रों को 'मुक्त' करने के लिए जिस नीति को अपनाया जाता है उसे **उदारीकरण (liberalization)** कहा जाता है।

1) रोज़गार का सृजन -
उदारीकरण केवल बहुराष्ट्रीय कंपनी तक सीमित नहीं होता बल्कि इससे स्वदेशी उद्योग तथा फर्में भी संचालन तथा स्पर्धा में सामने आती हैं। इसलिए बहुराष्ट्रीय कंपनियों पर अंकुश के साथ-साथ स्वदेशी उद्योगों और फ़र्मों पर भी **उदारीकरण** आवश्यक है। इससे रोज़गार में सृजनात्मक वृद्धि होती है। जो कि हमारी देश की मूल आवश्यकता है।

2) बजट घाटे में निरंतर वृद्धि -
उस समय देश के बजट घाटे में निरंतर वृद्धि देखी जा रही थी। इसलिए निरंतर बढ़ते बजट घाटे को कम करने के लिए **उदारीकरण की नीति** अपनाई गई।

3) मुद्रा स्फीति में लगातार वृद्धि -

घाटे की वित्त व्यवस्था अपनाने के कारण मुद्रा स्फीति अपने विकराल रूप को धारण कर चुकी थी। जिसका परिणाम यह हुआ कि सम्पूर्ण देश मँहगाई की मार से हलाकान हो रहा था। जिस पर नियंत्रण पाने के लिए **उदारीकरण की आवश्यकता** पड़ी।

4) प्रतिकूल भुगतान संतुलन -घरेलू क़ीमत स्तर में वृध्दि के फलस्वरूप आयातों को भरपूर प्रोत्साहन मिला। जबकि निर्यात बेहद हतोत्साहित हुए। जिस कारण देश का भुगतान तेज़ी से प्रतिकूल होने लगा। जिस पर नियंत्रण पाने के लिए *उदारीकरण की आवश्यकता* पड़ी।

5) विनियोग ढाँचे पर प्रतिकूल प्रभाव -
मुद्रा स्फीति बढ़ने के कारण लोगों के पास अनावश्यक रूप से मुद्रा की मात्रा बढ़ने लगी। जिस कारण विलासितापूर्ण वस्तुओं की माँग बढ़ने लगी जिसके फलस्वरूप विलासितापूर्ण वस्तुओं का उत्पादन बढ़ने लगा और आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन घटने लगा।

6) विदेशी ऋणों का बढ़ता बोझ -
चूँकि सार्वजनिक क्षेत्र को विकसित करने की प्राथमिकता, अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं एवं विदेशी सरकार से बड़ी मात्रा में ऋण एवं आर्थिक सहायता में वृद्धि का कारण बनने लगी थीं। जिस कारण देश पर विदेशी ऋण एवं इनके ब्याज़ का बोझ लगातार बढ़ने लगा। इन सब समस्याओं पर नियंत्रण पाने का एक मात्र था **उदारीकरण नीति** को अपनाना।

7) रहन सहन के स्तर में कमी -
देश में बढ़ती मँहगाई के कारण उपभोक्ताओं की औसत क्रयशक्ति में कमी आ गयी। तथा उपभोग व्यय में वृद्धि होने लगी। जिसका परिणाम यह हुआ कि उपभोक्ता के औसत जीवन स्तर में लगातार गिरावट आने लगी थी। ऐसी स्थिति में औसत जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के लिए *उदारीकरण की आवश्यकता* पड़ी।

उदारीकरण की विशेषता

1) कुछ विशिष्ट क्षेत्रों को छोड़कर शेष सभी क्षेत्रों के लिए लाइसेंस और परमिट पर लगे विभिन्न नियंत्रणों को समाप्त करना।

(2) आर्थिक विकास प्रक्रिया में आयी रुकावट को दूर करना। इसके लिए, कर की दरों को कम करना और अनावश्यक नियंत्रणों को हटाना

(3) उत्पादन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से उत्पादन संबंधी क्षेत्रों पर लगाए गए प्रतिबंधों को हटाना।

(4) व्यापार को व्यापक स्तर तक पहुँचाने के लिए विदेशी विनियोग को बढ़ावा देना।

(5) उदारीकरण का सीधा लाभ कृषि क्षेत्र को पहुँचाना। यानि कि कृषि का तीव्र विकास करना।
6) **बजट घाटे** एवं कुव्यवस्था के जाल से निकलने हेतु निजी क्षेत्र की व्यापक भूमिका बढ़ाना।

(7) बजट घाटे को कम कर मुद्रास्फीति को नियंत्रित करना।

(8) भुगतान संतुलन को अनुकूल बनाने का भरसक प्रयास करना।

(9) अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों में प्रवेश हेतु भारतीय उद्योगों में प्रतिस्पर्धा बढ़ाना।

(10) सार्वजनिक क्षेत्र में गतिशीलता तथा कुशलता लाने के लिए सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों के मुक़ाबले आरक्षित क्षेत्रों को कम करना।

(11) नित नए उद्योगों की स्थापना को आसान बनाना। ताकि ये उद्योग बड़े स्तर पर प्रतिस्पर्धा में अपनी भागीदारी निभा सकें।

(12) **वाणिज्यिक बैंकों** को उनके द्वारा दिये गये ऋणों पर ब्याज़ तय करने की छूट देना।

renaissance
renaissance